अगस्त 2022 वर्ष-1, अंक-8, मूल्य-50/-

# अमृत भूमि

MPHIN37435

## अमृत भूमि पर

# अमृत महोत्सव

**भगवान राम की इस पावन धरा पर आजादी का 75वां अमृत महोत्सव कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक संपूर्ण वातावरण को अमर सुगंध से भर रहा है**

आज़ादी का अमृत महोत्सव



“2007 में हमने लाड़ली लक्ष्मी योजना प्रारंभ की, ताकि समाज का नज़रिया बदले, इसलिए हमने योजना बनाई कि मध्यप्रदेश की धरती पर बेटी जन्म ले तो वह लखपति हो।
मेरा संकल्प है कि मेरी बेटियां सशक्त होकर आगे बढ़ें, मैंने लाड़ली लक्ष्मी योजना शुरू की, आज प्रदेश में 42 लाख से अधिक लाड़ली लक्ष्मी बेटियां हैं। मैं चाहता हूं कि मेरी बेटियां प्रशासनिक अधिकारी, प्राध्यापक, इंजीनियर, वैज्ञानिक, डॉक्टर बन प्रदेश का नाम रौशन करें। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि मेरी बेटियों पर अपने आशीष की वर्षा करना।”

**शिवराज सिंह चौहान**, मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

# मध्यप्रदेश में लाड़ली आगे बढ़ रही... नाम रोशन कर रही...





## लाड़ली लक्ष्मी योजना

**स्वावलंबी बालिका, सशक्त समाज का आधार**

बेटियों के प्रति समाज की नकारात्मक सोच, लड़कों के मुकाबले उनकी कम होती संख्या, बालिका शिक्षा की कमजोर स्थिति, बेटियों की जल्दी शादी जैसी समस्याओं के निदान एवं बालिकाओं के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य से मध्यप्रदेश सरकार द्वारा लाड़ली लक्ष्मी योजना 1 अप्रैल, 2007 से प्रारंभ की गई। लाड़ली लक्ष्मी योजना से मिलने वाले लाभ को स्थायी बनाने हेतु प्रदेश सरकार द्वारा 31 जुलाई, 2018 को मध्यप्रदेश लाड़ली लक्ष्मी (बालिका प्रोत्साहन) अधिनियम, 2018 लागू किया गया। यह अधिनियम प्रत्येक बालिका को मिलने वाली राशि की गारंटी प्रदान करता है।

### पात्रता एवं शर्तें

1. 1 जनवरी 2006 अथवा उसके बाद जन्मी बालिकाएं।
2. अनाथ या दत्तक बालिकाएं।
3. माता-पिता मध्यप्रदेश के मूल निवासी हों।
4. बालिका स्थानीय आंगनवाड़ी केन्द्र में पंजीकृत हो।
5. माता-पिता आयकर दाता न हों।
6. केवल दो संतान हेतु।
7. द्वितीय संतान के जन्म पर परिवार नियोजन अपनाना अनिवार्य।

### योजना के लाभ

लाड़ली लक्ष्मी योजना में बालिका को-

1. रुपये 1,18,000/- का आश्वासन प्रमाण पत्र।
2. कक्षा 6वीं में प्रवेश पर छात्रवृत्ति रुपये 2,000/- कक्षा 9वीं में प्रवेश पर छात्रवृत्ति रुपये 4,000/- कक्षा 11वीं में प्रवेश पर छात्रवृत्ति रुपये 6,000/- कक्षा 12वीं में प्रवेश पर छात्रवृत्ति रुपये 6,000/-
3. 21 वर्ष की आयु पूर्ण होने पर 1 लाख की राशि, बालिका का विवाह 18 वर्ष की आयु पूर्ण न होने व कक्षा 12वीं की परीक्षा में सम्मिलित होने की शर्त पर ई-पेमेंट के माध्यम से प्राप्त होगी।

### आवेदन करें

- पात्र हितग्राही लोक सेवा केन्द्र/ इंटरनेट कैफे / आंगनवाड़ी कार्यकर्ता के माध्यम से ऑनलाइन / ऑफलाइन आवेदन कर सकते हैं।
- जनसामान्य एवं प्रशासनिक सुविधा हेतु विभाग द्वारा ladlilaxmi.mp.gov.in वेबसाइट संचालित की जा रही है।

## लाड़ली लक्ष्मी योजना के बेहतर परिणाम सामने आ रहे हैं...

### उपलब्धियां

मध्यप्रदेश के 52 जिलों के 313 विकासखण्डों के 52,117 गांवों में योजनान्तर्गत अब तक 42 लाख से अधिक बालिकाओं का पंजीयन किया जा चुका है एवं लाड़ली लक्ष्मी योजना निधि में रुपए 10,654 करोड़ की राशि जमा की गई है। योजना प्रारंभ से अब तक कक्षा 6वीं, 9वीं, 11वीं एवं 12वीं में प्रवेशित कुल 9 लाख से अधिक बालिकाओं को राशि रुपए 251.07 करोड़ की छात्रवृत्ति का वितरण किया जा चुका है।

### NHFS-5 के अनुसार

मध्यप्रदेश में बाल विवाह में **9.3%** की कमी आई है।

जन्म के समय लिंगानुपात **927 से बढ़कर 956** हो चुका है।

### लाड़ली लक्ष्मी योजना 2.0

बालिकाओं को आत्मनिर्भर बनाने एवं आर्थिक रूप से सशक्त करने के लिए विभाग ने लाड़ली लक्ष्मी योजना 2.0 तैयार कर प्रारंभ की है। इसमें बालिकाओं को उच्च शिक्षा एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण की सुनिश्चितता का प्रावधान किया गया है।

### लाड़ली e-संवाद

लाड़लियों से माननीय मुख्यमंत्री जी के संवाद हेतु लाड़ली मोबाइल एप तैयार किया गया है। Google Play Store से यह एप download किया जा सकता है।

https://play.google.com/store/apps/details?id=com.crisp.ladlilaxmiyojna

[illegible]



### माँ तुझे प्रणाम

इस कार्यक्रम के अंतर्गत चयनित [illegible] लाड़ली बालिकाओं को देश की सीमा "वाघा बॉर्डर" का भ्रमण कराया गया।

### मुख्यमंत्री जी का धन्यवाद

"लाड़ली लक्ष्मी" योजना और "माँ तुझे प्रणाम" योजना हमें प्रोत्साहित करती है आगे बढ़ने के लिए। हमारे भविष्य को साकार करने का अवसर देने के लिए धन्यवाद।

**कु. [illegible] जैन**, लाड़ली लक्ष्मी, [illegible]

## बेटियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए दृढ़ संकल्पित मध्यप्रदेश सरकार

वक्र तुंड महाकाय, सूर्य कोटि समप्रभः। निर्विघ्नं कुरु मे देव शुभ कार्येषु सर्वदा॥

'किसी को अपने सपने चुराने न दें। यह आपके अपने सपने हैं, न कि किसी ओर के।'

# अमृत भूमि

वर्ष-1, अंक 8, भोपाल, अगस्त - 2022

**मार्गदर्शक**

पं. रामस्वरूप समाधिया

श्री धनेश चतुर्वेदी

श्री राकेश त्यागी (दिल्ली)

**प्रधान संपादक एवं प्रकाशक**

अतुल समाधिया

9827318384

atulsamadhiya@rediffmail.com

**सहयोगी संपादक**

डॉ. पुरुषोत्तम शर्मा

श्री आर.एस. भदौरिया

**संपादक (स्वास्थ्य)**

मनोज चतुर्वेदी

**अतिथि संपादक**

श्री आलोक नाथ, श्री विनीत दुबे

श्रीमती स्मृति आदित्य पाण्डे (इंदौर)

**पंजीकृत कार्यालय**

ए-5/102, ब्ल्यू स्काई हाईराइज आकृति ईको सिटी, बावड़ियाकलां, भोपाल

462039, मध्यप्रदेश, भारत

**संचालन कार्यालय**

एफ-137, फ्लेमिंगो, आकृति ईको सिटी, बावड़ियाकलां, भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत

**आवरण एवं साज सज्जा**

वेबथिंक टेक्नोलॉजी, भोपाल (7000297982)

**मुद्रक**

विकास ऑफसेट प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स

एफ-45, औद्योगिक क्षेत्र, गोविंदपुरा, भोपाल

फोन-0755- 2401952, 9425005624

vikasoffsetbhopal@gmail.com

**साभार-** पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्रों का स्रोत गूगल है।

पत्रिका में प्रकाशित समस्त लेख लेखक के स्वतंत्र विचार हैं, इसमें संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। विवादों में पड़ना हमारा अभिप्राय नहीं, परंतु विवाद होने पर न्यायक्षेत्र भोपाल ही होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं प्रधान संपादक श्री अतुल समाधिया द्वारा विकास ऑफसेट, 45 सेक्टर-एफ, इंडस्ट्रियल एरिया, गोविंदपुरा, भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित एवं ए-5/102, ब्ल्यू स्काई हाईराइज आकृति ईकोसिटी, बावड़ियाकलां, भोपाल से प्रकाशित।

संपादकीय ..... 3
अखिल भारतीयता को चुनौतिया ..... 4
भगवा-भय और तिरंगी यादें ..... 6
स्वास्थ्य सेवाओं के सुधार के लिए कोविड के सबक ..... 8
उपलब्धियों भरे बदलाव की यात्रा ..... 10
बहन का सम्मान और भाई का चरित्र दोनों कायम रहे ..... 12

मराठी जनता से फिर से जुड़ने उद्धव-आदित्य ने कसी कमर ..... 18
प्रकृति रक्षति रक्षितः ..... 20

जन्माष्टमी पर घर में ऐसे सजाएं कान्हा जी की झांकी ..... 24
अक्षय की रक्षा बंधन में दहेज प्रताड़ना की कहानी ..... 28
भविष्यफल ..... 32

# अमृत भूमि

'अमृत भूमि' सजग है, जागरूक है और कटिबद्ध है भारत का गौरव बढ़ाने के लिए। विश्व की श्रेष्ठतम भारतीय संस्कृति को निरन्तर पुष्टि देने के लिए राष्ट्रीय विचार-यज्ञ में अपनी आहुति देता चला आ रहा है।

राष्ट्र की प्राण-वायु को पुष्ट करने के लिए संकल्पित 'अमृत भूमि' की इस लोक कल्याणकारी यात्रा को आगे बढ़ाने में आप भी सहभागी बनें।

| | |
|---|---|
| मासिक सदस्यता | 50/- |
| वार्षिक | 550/- |
| आजीवन सदस्यता | 50,000/- |

---

**सभी सहभागियों को 'अमृत भूमि' नियमित प्रेषित किया जाएगा एवं उनके किसी विशेष अवसर पर शुभकामना संदेश भी प्रकाशित किया जाएगा। द्विवार्षिक सदस्यता (1000/-) देकर प्राप्त की जा सकती है।**

## सहभागिता/सदस्यता पत्र

नाम ..... जन्म तिथि .....

पता .....

.....

मोबाइल ..... ई-मेल .....

विवाह वर्षगांठ ..... व्यवसाय .....

सहभागिता/सदस्यता राशि ..... चेक/ड्राफ्ट संख्या .....

स्थान ..... दिनांक ..... हस्ताक्षर .....

**सहभागिता/सदस्यता राशि के सभी ड्राफ्ट/चेक 'अमृत भूमि' के नाम से निम्नलिखित पते पर पूर्ण विवरण के साथ प्रेषित करने की कृपा करें। राशि आप सीधे हमारे मोबाइल नंबर 9827318384 पर Gpay या Phonepe कर भी कर सकते हैं।**

## पता

ए-5/102, ब्ल्यू स्काई हाईराइज आकृति ईकोसिटी, बावड़ियाकलां, भोपाल
फोन : 9827318384 ई-मेल amritbhumibhoal@gmail.com

# समुद्र मंथन और आजादी का अमृत महोत्सव

अतुल समाधिया
संपादक
atulsamadhiya@rediffmail.com
Mob: 9827318384

विकसित वह है, जो खुश है। जो अभावों में भी आनन्दित है, जिसके पास बौद्धिक संपदा है, सनातन ज्ञान का भंडार है, जिसके पास अभिमान नही स्वाभिमान है, जिसके पास संस्कार हैं । बेशक हमारी इमारतें छोटी हैं पर दिल बड़े हैं । आओ... आनंद में जियें, कि अब देश बदल रहा है । ताल ठोक कर कहो, की हम भारतीय हैं, हमें भारतीय होने पर गर्व है ।

**शायद** यह संयोग ही है, की देश भर में एक ओर जहां अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है, वहीं दूसरी ओर चुन चुन कर अपराधियों, भृष्टाचारियों को जेल के सीखचों में बंद किया जा रहा है । जगह जगह श्रष्ठ की कार्यवाही से भ्र्ष्टाचार की कमाई के ढेर पर फन फैलाये बैठे लोगों के पेट मे मरोड़ उठने लगी है । अमृत ओर विष अलग अलग हो रहे हैं । स्वच्छता अभियान सिस्टम की गंदगी को साफ करने के अभियान तक पहुंच गया है।

नेतृत्व यदि मजबूत हो और उसके इरादों में साफगोई हो तो उस राष्ट्र को मजबूत होने से कोई नही रोक सकता । देश आजादी के 75 वें वर्ष को अमृत महोत्सव के रूप में मना रहा है । भारत की सनातन संस्कृति, अमृत बन कर बाहर आ रही है । वहीं पिछले 75 वर्षों से देश की रगों में विष बेल की तरह फैल चुके भ्र्ष्टाचार और वंशवाद का विष पृथक हो रहा है ।

सवा सौ करोड़ के देश से गंदगी साफ करना आसान नही है । बीमारी जितनी गंभीर होगी, दवा भी उतनी कड़वी होगी। जल्दी ठीक होने के लिए ज्यादा कड़वी दवा तो पीना ही होगी।

*माना कि मंहगाई है,*
*जीने में कठिनाई है,*
*क्या करें लाचारी है,*

*फिर भी....*
*कल जीवन अच्छा होगा,*
*यही आस लगाई है,*
*आशा की फुलवारी है,*
*तो,जीवन मे तरुणाई है,*

भारत त्याग, तप और बलिदान की भूमि है । यहां प्रजा ही राजा है । स्वाभिमान उसके मस्तक का तिलक है । इस समुद्र मंथन में देश अपने खोए हुए स्वाभिमान को वापस पाने में लगा हुआ है । लुटेरों के नाम पर चल रहे शहरों, स्थानों ओर संस्थानों के नाम बदलकर शहीदों, स्वाभिमानियों, बलिदानियों के नाम पर रखा जाना कोई राजनीतिक प्रपंच नही है, बल्कि राष्ट्र की सुप्त चेतना को जगाने का अभियान है ।

इस समुद्र मंथन में स्वाभिमान, राष्ट्र चेतना और आनंद का उद्भव हो रहा है ।

किसी भी देश को विकसित मानने के वैश्विक पैमाने झूठे हैं । केवल ज्यादा ₹छक्क ऊंची इमारतें, अच्छी सड़कें ओर सैन्य ताकत, विकसित होने का सबब नही हो सकतीं ।

विकसित वह है, जो खुश है । जो अभावों में भी आनन्दित है, जिसके पास बौद्धिक संपदा है, सनातन ज्ञान का भंडार है, जिसके पास अभिमान नही स्वाभिमान है, जिसके पास संस्कार हैं । बेशक हमारी इमारतें छोटी हैं पर दिल बड़े हैं ।

आओ... आनंद में जियें, कि अब देश बदल रहा है । ताल ठोक कर कहो, की हम भारतीय हैं, हमें भारतीय होने पर गर्व है । हमें सनातनी होने का गौरव प्राप्त है । हम ही विश्व गुरु हैं । दुनियां को जीवन का ज्ञान हम ही दे सकते हैं ।

आजादी के अमृत महोत्सव और स्वतंत्रता दिवस की सभी सुधि पाठकों को अमृत भूमि परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

***जय हिन्द.... जय भारत.....***

# अखिल भारतीयता को चुनौतिया

भारत की आजादी और भारतीय गणतंत्र की मुकम्मल कामयाबी की एकमात्र शर्त यही है कि जी-जान से अखिल भारतीयता का सम्मान करने वाले क्षेत्रों और तबकों की अस्मिताओं और संवेदनाओं की कद्र की जाए। आखिर जो तबके हर तरह से वंचित होने के बाद भी शेषनाग की तरह भारत को अपनी पीठ पर टिकाए हुए हैं, उनकी स्वैच्छिक भागीदारी के बगैर क्या हमारी आजादी मुकम्मल हो सकती है और क्या हमारा गणतंत्र मजबूत हो सकता है?

देश में सत्ता-प्रेरित सांप्रदायिक नफरत से बनते गृहयुद्ध के हालात, शक्तिशाली पड़ोसी देश द्वारा देश की सीमाओं का अतिक्रमण और उस पर हमारी चुप्पी, अर्थव्यवस्था का आधार माने जाने वाली खेती-किसानी पर मंडराता संकट, ध्वस्त हो चुकी अर्थव्यवस्था अभूतपूर्व महंगाई-बेरोजगारी और चारों तरफ लहलहाती अपराधों की फसल के बीच अपनी आजादी का अमृत महोत्सव मनाते हुए हमारे लिए सबसे बड़ी चिंता की बात क्या हो सकती है या क्या होनी चाहिए?

क्या हमारे वे तमाम मूल्य और प्रेरणाएं सुरक्षित हैं, जिनके आधार पर आजादी की लंबी लड़ाई लड़ी गई थी और जो आजादी के बाद हमारे संविधान का मूल आधार बनीं? क्या आजादी हासिल होने और संविधान लागू होने के बाद हमारे व्यवस्था तंत्र और देश के आम आदमी के बीच उस तरह का सहज और संवेदनशील रिश्ता बन पाया है, जैसा कि एक व्यक्ति का अपने परिवार से होता है? आखिर आजादी हासिल करने और फिर संविधान की रचना के पीछे मूल भावना तो यही थी।

भारत के संविधान में राज्य के लिए जो नीति-निर्देशक तत्व हैं, उनमें भारतीय राष्ट्र-राज्य का जो आंतरिक लक्ष्य निर्धारित किया गया है, वह बिल्कुल महात्मा गांधी के सपनों और हमारे राष्ट्रीय आंदोलन के मूल्यों का दिग्दर्शन कराता है। फिर भी, हमारे संविधान और उसके आधार पर कल्पित तथा मौजूदा साकार गणतंत्र की सबसे बड़ी त्रासदी यही है कि जो कुछ नीति-निर्देशक तत्व में है, राज्य का आचरण कई मायनों में उसके विपरीत है। मसलन, प्राकृतिक संसाधनों का बंटवारा इस तरह करना था जिससे स्थानीय लोगों का सामूहिक स्वामित्व बना रहता और किसी का एकाधिकार न होता तथा गांवों को धीरे-धीरे स्वावलंबन की ओर अग्रसर किया जाता।

इसके विपरीत हम अपनी आजादी की 76वीं सालगिरह मनाते हुए देख सकते हैं कि जल, जंगल,

जमीन आदि तमाम प्राकृतिक संसाधनों पर से स्थानीय निवासियों का स्वामित्व धीरे-धीरे पूरी तरह खत्म हो गया है और सत्ता में बैठे राजनेताओं और नौकरशाहों से सांठ-गांठ कर औद्योगिक घराने उनका मनमाना उपयोग कर रहे हैं; और यह सब राज्य यानी सरकारों की नीतियों के कारण हो रहा है। यही नहीं, अब तो देश की जनता की खून-पसीने की कमाई से खड़ी की गई और मुनाफा कमा रही तमाम बड़ी सरकारी कंपनियां देश के बड़े औद्योगिक घरानों को औने-पौने दामों में सौंपी जा रही हैं। सार्वजनिक क्षेत्र में सर्वाधिक रोजगार देने वाली भारतीय रेल का भी तेजी से निजीकरण शुरू हो चुका है। राष्ट्रीयकृत बैंकों की संख्याएं कम की जा चुकी हैं और जो अभी अस्तित्व में हैं उन्हें भी निजी हाथों में सौंपे जाने की तैयारी हो रही है।

भारत सरकार भले ही दावा करे कि आर्थिक तरक्की के मामले में पूरी दुनिया में भारत का डंका बज रहा है, लेकिन हकीकत यह है कि वैश्विक आर्थिक मामलों के तमाम अध्ययन संस्थान भारत की अर्थव्यवस्था का शोक गीत गा रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र की एजेंसी यूएनडीपी ने तमाम आंकड़ों के आधार पर बताया है कि भारत टिकाऊ विकास के मामले में 190 देशों में 117वें स्थान पर है। अमेरिका और जर्मनी की एजेंसियों ने जानकारी दी है कि ग्लोबल हंगर इंडेक्स में 116 देशों में भारत 101 वें स्थान पर है। संयुक्त राष्ट्र के वैश्विक खुशहाली सूचकांक में भारत की स्थिति में लगातार गिरावट दर्ज हो रही है।

कुछ समय पहले जारी हुई पेंशन सिस्टम की वैश्विक रेटिंग में भी दुनिया के 43 देशों में भारत का पेंशन सिस्टम 40वें स्थान पर आया है। पासपोर्ट रैंकिंग में भी भारत 84वें स्थान से फिसल कर 90वें स्थान पर पहुंच गया है। यह स्थिति भी देश की अर्थव्यवस्था के पूरी तरह खोखली हो जाने की गवाही देती है।

वैश्विक स्तर पर भारत की साख सिर्फ आर्थिक मामलों में ही नहीं गिर रही है, बल्कि लोकतंत्र, अभिव्यक्ति की आजादी, मानवाधिकार और मीडिया की आजादी में भी भारत की रैंकिंग इस साल पहले के मुकाबले बहुत नीचे आ गई है। हालांकि भारत सरकार ऐसी रिपोर्टों को तुरंत खारिज कर देती है, जबकि यह रेटिंग किसी सर्वे पर नहीं, बल्कि तथ्यों पर आधारित होती है।

बेशक हम इस बात पर गर्व कर सकते हैं कि आजाद भारत का पहला बजट 193 करोड़ रुपए का था और अब हमारा 2022-23 का बजट करीब 39.45 लाख करोड़ रुपए का है। यह एक देश के तौर पर हमारी असाधारण उपलब्धि है। इसी प्रकार और भी कई उपलब्धियों की गुलाबी और चमचमाती तस्वीरें हम दिखा सकते हैं,

लेकिन जब हम इस प्रश्न पर विचार करते हैं कि आजाद भारत का हमारा लक्ष्य क्या था तो फिर सतह की इस जगमगाहट के पीछे स्याह अंधेरा नजर आता है। देश की 80 फीसदी आबादी को मिल रहा तथाकथित मुफ्त राशन, इस स्थिति पर गर्व करती सत्ता और इसके बावजूद भूख से मरते लोग, भयावह भ्रष्टाचार, पानी को तरसते खेत, काम की तलाश करते करोड़ों हाथ, देश के विभिन्न इलाकों में सामाजिक और जातीय टकराव के चलते गृहयुद्ध जैसे बनते हालात, बेकाबू कानून-व्यवस्था और बढ़ते अपराध, चुनावी धांधली, विभिन्न राज्यों में आए दिन निर्वाचित जनप्रतिनिधियों की खरीद-फरोख्त के जरिए जनादेश का अपहरण, निर्वाचन आयोग का सत्ता के इशारे पर काम करना, न्यायपालिका के जनविरोधी फैसले और सत्ता की पैरोकारी, सत्ता से असहमति का निर्ममतापूर्वक दमन जैसी बातें हमारे गणतंत्र की मजबूती और कामयाबी के दावे को मुंह चिढ़ाती हैं।

सवाल है कि क्या यह मान लिया जाना चाहिए कि हम एक असफल राष्ट्र बनने की दिशा में बढ़ रहे हैं? समस्याएं और भी कई हैं जो हमें इस सवाल पर सोचने पर मजबूर करती हैं। दरअसल, भारत की वास्तविक आजादी बड़े शहरों तक और उसमें भी सिर्फ उन खाए-अघाए तबकों तक सिमट कर रह गई हैं जिनके पास कोई राष्ट्रीय परिदृश्य नहीं है। इसीलिए शहरों का गांवों से नाता टूट गया है।

हालांकि इस कमी को दूर करने के लिए तीन दशक पहले पंचायती राज प्रणाली लागू की गई, मगर ग्रामीण इलाकों में निवेश नहीं बढ़ने से पंचायतें भी गांवों को कितना खुशहाल बना सकती हैं? इन्हीं सब कारणों के चलते हमारे संविधान की मंशा के अनुरूप गांव स्वावलंबन की ओर अग्रसर होने की बजाय अति परावलंबी और दुर्दशा के शिकार होते गए। गांव के लोगों को सामान्य जीवन-यापन के लिए भी शहरों का रुख करना पड़ रहा है। खेती की जमीन पर सीमेंट के जंगल उग रहे हैं, जिसकी वजह से गांवों का क्षेत्रफल कितनी तेजी से सिकुड़ रहा है, इसका प्रमाण 2011 की जनगणना है। इसमें पहली बार गांवों की तुलना में शहरों की आबादी बढ़ने की गति अब तक की जनगणनाओं में सबसे ज्यादा रही। शहरों की आबादी 2001 की 27.81 फीसदी से बढ़कर 2011 की जनगणना के मुताबिक 31.16 फीसदी हो गई जबकि गांवों की आबादी 72.19 फीसदी से घटकर 68.84 फीसदी हो गई। अब 2021 में स्थगित हुई जनगणना जब भी होगी तो उसमें यह अंतर और भी ज्यादा बढ़कर सामने आना तय है। इस प्रकार गांवों की कब्रगाह पर विस्तार ले रहे शहरीकरण की प्रवृत्ति हमारे संविधान की मूल भावना के एकदम विपरीत है। हमारा संविधान कहीं भी देहाती आबादी को खत्म करने की बात नहीं करता, पर विश्व बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के इशारे पर बनने वाली हमारी आर्थिक नीतियां वही भूमिका निभा रही हैं और इसी से गण और तंत्र के बीच की खाई लगातार गहरी होती जा रही है।

दरअसल, भारत की आजादी और भारतीय गणतंत्र की मुकम्मल कामयाबी की एकमात्र शर्त यही है कि जी-जान से अखिल भारतीयता का सम्मान करने वाले क्षेत्रों और तबकों की अस्मिताओं और संवेदनाओं की कद्र की जाए। आखिर जो तबके हर तरह से वंचित होने के बाद भी शेषनाग की तरह भारत को अपनी पीठ पर टिकाए हुए हैं, उनकी स्वैच्छिक भागीदारी के बगैर क्या हमारी आजादी मुकम्मल हो सकती है और क्या हमारा गणतंत्र मजबूत हो सकता है? जो समाज स्थायी तौर पर विभाजित, निराश और नाराज हो, वह कैसे एक सफल राष्ट्र बन सकता है?

# 14 और 15 अगस्त 1947 की मध्य रात्रि को मुहूर्त देखकर हुआ था ध्वजारोहण

पंडित सूर्यनारायण व्यास, उज्जैन

जब भारत में स्वतंत्रता की बात शुरू हुई और यह तय किया गया कि सिर्फ 2 दिन दिए जाएंगे 14 अगस्त और 15 अगस्त।

एक दिन पाकिस्तान शपथ लेगा और एक दिन भारत शपथ ले । दोनों स्वतंत्र हो जाए। तब राजेंद्र बाबू ने गोस्वामी गणेश दत्त जी महाराज (गोस्वामी गिरधारी लाल के गुरु) - के माध्यम से पंडित सूर्यनारायण व्यास को बुलाया। तब हरदेव शर्मा त्रिवेदी को पंडित सूर्यनारायण व्यास साथ लेकर आए। वह भी पंडित व्यास के पूज्य पिता के शिष्य थे ( विश्व पंचांग सोलन वाले)।

पंडित सूर्यनारायण व्यास ने कहा दो ही दिन बचे हैं, 14 अगस्त 15 अगस्त। उसमें से मध्य रात्रि मुहूर्त निकाला। भारत की आजादी का 12:00 बजे का स्थिर लग्न नक्षत्र, जिसमें इस देश का लोकतंत्र सदा स्थिर रहेगा। चाहे शनि की दशा में देश की आजादी हुई, चाहे देश के टुकड़े हो गए हो, केतु की महादशा में देश भुखमरी और तंगहाली से गुजरा हो, बुध की महादशा में बौद्धिक वाकविलास हुआ हो। लेकिन जब से 90 में शु' की दशा लगी तो पंडित जी को बराबर याद किया जाता है। 90 से उनका अद्भुत विजन कि, 50 बरस बाद, यह राष्ट्र दुनिया का सिरमौर होगा।

(गीता प्रेस गोरखपुर की पुस्तक 'कल्याण' के ज्योतिषतत्वांक से साभार)

# भगवा-भय और तिरंगी यादें

**मनोहर नायक**

जनता और नेताओं में घर कर गई निराशा को लक्ष्य करते हुए उन्होंने कहा था कि निराशा का मूल हमारी अपनी कमजोरियों और अविश्वास में होता है। जब तक हम अपने में भरोसा नहीं खो देते तब तक भारत का कल्याण ही होगा। आंदोलन के सिंहनाद के पहले वे कांग्रेस कार्य समिति की बैठक में दो बार बोले, यह एक छोटा सा मंत्र आपको देता हूं। आप इसे अपने हृदयपटल पर अंकित कर लीजिये और हर श्वांस के साथ उसका जाप कीजिये। वह मंत्र है - करो या मरो! या तो हम भारत को आजाद करेंगे या आजादी की कोशिश में प्राण दे देंगे!

इस सरकार के पास आजादी के इन सालों में अपना कुछ जोड़ा हुआ बताने लायक़ है नहीं, सिवाय उन दुःस्वप्नों और नाकामियों के जो असहाय जनता पर टूट पड़ी हैं। इसी कारण राष्ट्रवाद के उफान और शोर में स्वतंत्रता, संविधान, संसद, मानवाधिकारों के ज्वलंत सवालों के साथ जनता के जीवन-मरण और स्वाभिमान के प्रश्नों को डुबो देने का विराट आयोजन है। यह अवसर जितने जश्न का है उतने ही गहरे सोच-विचार का है। पर इनके पास सब चीजों का हल धर्म और राष्ट्रवाद है। संघ- सरकार के देशप्रेम की इससे बढ़ी मिसाल क्या होगी कि उन्होंने अपने धर्मध्वजी भक्तों के हाथों में राष्ट्रध्वज थमा दिया है!

आज जब हम पंद्रह अगस्त को याद कर रहे हैं तो हमें अपने मौजूदा समय को बराबर ध्यान में रखना चाहिए, यह जानने के लिये कि उन परिस्थितियों में क्या आज के लिये कोई सबक है? यह जरूरी है, क्योंकि आज कोशिश मूल सरोकारों, चिंताओं, उद्देश्यों को ओट में करने की है। आज जो हालत देश की है- लोकतंत्र, संविधान, संसद की है, स्वतंत्रता, नागरिक अधिकारों की हैं, उसमें नौ, पंद्रह अगस्त और छब्बीस जनवरी की दूरगामी, सार्थक भूमिका हो सकती है। वे सही दिशा और समझ देने में सहायक हो सकते हैं, देश और जन-हितकारी सोच के लिये वैचारिक स्फुरण दे सकते हैं।

सरकारों के जनविरोधी कामों और रवैये से इन राष्ट्रीय पर्वों में औपचारिकता भरती गई, सरकारों का इसमें फायदा ही था, सो उन्होंने वैसा होने दिया और ये अवसर अपनी जनाभिमुखता, जीवंतता और चमक खोते चले गये, आये-गये हो गये। भला घर-घर तिरंगा से किसे एतराज होगा? अभी कुछ साल पहले तक राष्ट्रध्वज खुद नियम-क़ानूनों के बंधनों में जकड़ा हुआ था अदालत ने उसे उन्मुक्त किया और तब से वह खूब फहरा रहा है... हमारी स्वतंत्रता के इस अमृत वर्ष में स्वतंत्रता के प्रतीक तिरंगे का वैभव निश्चित चौतरफा और खूब दिखना चाहिए। एक नजर में दस हजार दिखें! लेकिन सरकार की मूल मंशा इस ऐतिहासिक अवसर को तमाशे और हो-हल्ले में बिता देने की है। इनकी फितरत हर चीज को तमाशे में बदल देने वाली है, कि अच्छा-खासा अवसर अनदेखा चला जाए, फिर वह महामारी हो या अमृतवर्ष!

इस सरकार के पास आजादी के इन सालों में अपना कुछ जोड़ा हुआ बताने लायक़ है नहीं, सिवाय उन दुःस्वप्नों और नाकामियों के जो असहाय जनता पर टूट पड़ी हैं। इसी कारण राष्ट्रवाद के उफान और शोर में स्वतंत्रता, संविधान, संसद, मानवाधिकारों के ज्वलंत सवालों के साथ जनता के जीवन-मरण और स्वाभिमान के प्रश्नों को डुबो देने का विराट आयोजन है। यह अवसर जितने जश्न का है उतने ही गहरे सोच-विचार का है। पर इनके पास सब चीजों का हल धर्म और राष्ट्रवाद है। संघ- सरकार के देशप्रेम की इससे बढ़ी मिसाल क्या होगी कि उन्होंने अपने धर्मध्वजी भक्तों के हाथों में राष्ट्रध्वज थमा दिया है!

तिरंगे को इस तरह कट्टर राष्ट्रवाद का इश्तहार बनाना दुर्भाग्य ही है। रघुवीर सहाय की कविता - पंक्ति को थोड़ा बदलकर कहें तो, जितने झंडे लगे, उतनी बढ़ी आड़ हो गई। सोशल मीडिया में धड़ाधड़ लोगों ने तिरंगा लगा लिया है, यह भी खुशी की ही बात है। तिरंगे के साथ खोटुओं वालों की खुशी देखते ही बनती है – कनपटी तक खिली बांछें! हैरत है कि तिरंगे से जुड़ी तार-तार होती विरासत को लेकर आज तक एक शिकन वाली भी फोटू न भक्तों की दिखी और न उनके भगवान की। इनमें बहुतेरे वे होंगे जिन्हें महामारी के हाहाकारी हालात को लेकर कोई विकलता नहीं थी और जो मुदित ताली- थाली बजा रहे थे।

उस समय 1942 में देश गहरी निराशा में डूबा हुआ था दुनिया विश्व युद्ध में जल रही थी, हमारे विदेशी आकाओं ने मनमाने ढंग से भारत को महायुद्ध में शामिल घोषित कर दिया था, हमलावर चौखट तक आ पहुंचे थे; हमारी स्थिति मूकनिष्क्रयता की थी। किसी भी तरह से अहिंसक आंदोलन के लिये कोई गुंजाइश नहीं थी, तब गांधीजी ने भारत छोड़ो आंदोलन यह कहते हुए छेड़ दिया कि सारी दुनिया के राष्ट्र मेरा विरोध करें और सारा भारत मुझे समझाये कि मैं गलती पर हूं, तो भी मैं भारत की खातिर ही नहीं, परन्तु सारे संसार की खातिर भी इस दिशा में आगे बढ़ूंगा। वे मानते थे कि अहिंसा के रूप में उनके पास ईश्वर प्रदत्त अमूल्य भेंट है, यदि वर्तमान संकट में वे इसका इस्तेमाल नहीं करते तो ईश्वर उन्हें कभी क्षमा नहीं करेगा।

जवाहरलाल नेहरू समेत तमाम नेता उस वक़्त आंदोलन को लेकर भारी भ्रम की मनः स्थिति में थे। पर अपने संकल्प और अडिग विश्वास से गांधीजी ने विरोध को शांत कर सभी को सहमत किया और कांग्रेस उनके पीछे खड़ी हो गई। आंदोलन में कूद पड़ी।

जनता और नेताओं में घर कर गई निराशा को लक्ष्य करते हुए उन्होंने कहा था कि निराशा का मूल हमारी अपनी कमजोरियों और अविश्वास में होता है। जब तक हम अपने में भरोसा नहीं खो देते तब तक भारत का कल्याण ही होगा। आंदोलन के सिंहनाद के पहले वे कांग्रेस कार्य समिति की बैठक में दो बार बोले, यह एक छोटा सा मंत्र आपको देता हूं। आप इसे अपने हृदयपटल पर अंकित कर लीजिये और हर श्वांस के साथ उसका जाप कीजिये। वह मंत्र है - करो या मरो! या तो हम भारत को आजाद करेंगे या आजादी की कोशिश में प्राण दे देंगे!

हर सच्चा कांग्रेसी, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, इसी दृढ़निश्चय से संघर्ष में शामिल होगा कि वह देश को बंधन और दासता में बने रहने को देखने के लिये जिंदा नहीं रहेगा। ऐसी आपकी प्रतिज्ञा होनी चाहिए। मैं पूर्ण

स्वतंत्रता के सिवाय किसी चीज से संतुष्ट होने वाला नहीं मैं कहता हूं कि अगर हो सके तो आजादी फौरन दे दी जाये- आज रात को ही, कल पौ फटने से पहले ही! अब आजादी के लिये साम्प्रदायिक एकता का इंतजार नहीं किया जा सकता। यह मत भूलिए कि कांग्रेस जिस आजादी के लिये लड़ रही है वह सिफ कांग्रेस के लिये नहीं होगी, वह तो भारत के सभी चालीस करोड़ लोगों के लिये होगी।

आँदोलन के लिये गांधीजी की टेक थी कि भारत की आत्मा नहीं मरनी चाहिए। अगस्त- प्रस्ताव को उन्होंने उदात्त घोषणा कहा था। भारत छोड़ो आह्वान के बाद दमनचक्र शुरू हो गया। हजारों लोग जेलों में ठूंस दिये गये। गांधीजी समेत सभी बढ़े नेता पकड़ लिये गये। कहने को सरकार ने आंदोलन को दबा दिया, पर इसने लोगों की चेतना को झकझोर दिया। उनमें नये प्राणों का संचार हुआ। जबलपुर में 8-9 अगस्त की रात जनरल राउंड अप में मेरे पिता गणेश प्रसादजी नायक भी गिरफ़्तार हुए और बिना पैरोल के क़रीब तीन साल बाद रिहा हुए। उनके घनिष्ठ संगी- साथी सभी सेनानी थे। उनके पास संग्राम के चकित करने वाले क़िस्से थे।

देश भर में 42 की क्रांति के अनंत क़िस्से थे। बिहार में कई क्षेत्रों सहित बलिया, सितारा, मिदनापुर को आजाद करा लिया गया था। आंदोलन शुरू होने के तीसरे ही महीने हजारीबाग जेल की दीवार फलांग कर फरार हुए जयप्रकाश नारायण देश की हठी जवानी के पर्याय हो गये थे। अरुणा आसिफ अली की हैसियत हीरो की थी। सुभाष महानायक हो चुके थे। गांधीजी भूमिगत होकर काम करने के खिलाफ थे। उनकी सलाह पर अच्युत पटवर्धन इससे अलग हो गये, पर अरुणा आसिफ अली भूमिगत कार्रवाई में लगी रहीं। गांधीजी को लगने लगा था कि जनता अहिंसा को पूरी तरह पचा नहीं पाई है। उनके सचिव प्यारेलाल ने लिखा है कि आगा खां पैलेस में कारावास के दिनों में यह विचार उन्हें मथता रहता था कि भारत छोड़ो आंदोलन में अहिंसा मानने वालों की तुलना में उन लोगों ने अधिक वीरतापूर्वक काम किया जो अहिंसा को नहीं मानते।

महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू के बेजोड़ नेतृत्व के कारण कांग्रेस ने स्वतंत्रता संग्राम में ऐतिहासिक भूमिका निभाई। गांधीजी के अहिंसक आंदोलन की भूमिका निर्णायक थी, पर इसमें वे तमाम अनाम लोग शामिल हैं जो आजादी के आंदोलन में सहायक हुए। भगतसिंह से लेकर शहादतों का लम्बा सिलसिला है। यह बात ध्यान रखने की है कि बुनियादी तौर पर अहिंसक होते हुए भी आजादी हमें बहुत खून देकर मिली है- जलियांवाला बाग इसकी एक बढ़ी मिसाल है।

इसलिए यह ऐहतियात जरूरी है कि हम देशप्रेम की रौ में अमृत महोत्सव के इस महान अवसर को घरों में, कारों में झंडा लगाने की औपचारिकता में ही न व्यतीत कर दें। हमें अपने राष्ट्रीय संग्राम के बारे में धीर धर के सोचना चाहिए। उसके बारे में जानना-समझना चाहिए। उसके इतिहास, उसकी परम्परा और मूल्यों को जानना चाहिए। हमें पंद्रह अगस्त को सिर्फ आजादी ही नहीं मिली, प्रजातंत्र मिला, संसदीय व्यवस्था मिली और 26 जनवरी, 1950 को संविधान मिला।

हमने समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, समानता और समान अवसर के मानवीय मूल्यों को अंगीकार किया। हमने बंटवारे की त्रासदी, साम्प्रदायिक रक्तपात और गांधीजी की शहादत के बाद अनेकता में एकता, विविधता और भाईचारे की भावना को स्वीकार किया। पचहत्तर साल की यह यात्रा अनेक दुःस्वप्नों से होकर गुजरी पर इसने कीर्तिमानों की एक अमिट शिला भी निर्मित की जिस पर हमें गर्व होना चाहिए।

यह आवश्यक है कि हम इस अवसर का उपयोग तटस्थ आकलन में करें और उसमें एक जिम्मेदार व संवेदनशील नागरिक के तौर पर अपनी भूमिका की भी निर्मोही समीक्षा करें। इस अवसर को एक भव्य उत्सव की भेंट न चढ़ने दें। आम जन से लेकर सरकारों, राजनीतिक दलों, लेखकों, बुद्धिजीवियों, पत्रकारों सबको यह मंथन करना चाहिए कि हम आगे कैसे अपनी विरासत को न सिर्फ सम्हालें, बल्कि उसका विकास और परिष्कार करें। हमें स्वतंत्रता बहुत कुछ देती है, जैसे कि देश और समाज हमें देते ही रहते हैं। आप वही करिये जो आप करने में सक्षम और विशिष्ट हों ... तिरंगा लगाकर तिरंगे की भावना बनी रहे, ऐसा कुछ करिये!

# स्वास्थ्य सेवाओं के सुधार के लिए कोविड के सबक

**- डॉ. माया वालेचा/विनीत तिवारी**

एक मजबूत राष्ट्रीय स्वास्थ्य व्यवस्था की आवश्यकता है, जिसमें देश के सभी संसाधनों को लोगों की उत्तम सेवा के लिए उपयोग में लाया जा सके। बेशक सरकार को अधिक खर्च करना होगा और इसके लिए अमीर वर्ग पर ज्यादा कर/टैक्स लगाना होगा। सालों से उन्हें सभी तरह के कर-लाभ, रियायतें, कर-मुक्त अवधि, कर-कटौती, बेलआउट और अन्य कई लाभ दिए गए हैं। सुपर रिच टैक्स एक ऐसा उपाय है।

निजी क्षेत्र के अस्पताल और अन्य स्वास्थ्य सेवाएं सामान्यतः गरीब तबके की पहुंच से इतनी बाहर रहती हैं कि उनके होने, न होने से गरीबों को कोई फर्क नहीं पड़ता। ये सेवाएं आमतौर पर समाज के धनी और उच्च मध्यमवर्गीय हिस्से के काम आती हैं जो स्वास्थ्य पर इतना अधिक खर्च कर सकते हैं। देश में आम लोग सरकारी अस्पतालों में अपना इलाज करवाकर ठीक होते रहे हैं। अच्छा हो या बुरा, इस भेदभावपूर्ण स्वास्थ्य व्यवस्था को मिश्रित अर्थव्यवस्था वाले मॉडल की तरह देश में स्वीकार कर लिया गया था। कुल जनसंख्या का एक बढ़ा हिस्सा या तो सरकारी और सस्ती स्वास्थ्य सेवाएं हासिल कर लेता था या फिर कुछ भी हासिल नहीं कर पाता था। निजी क्षेत्र के बढ़े महंगे अस्पताल उनकी पहुंच से बाहर रहते थे।

उदारीकरण की शुरुआत के बाद से सरकारी या सार्वजनिक क्षेत्र को सिकोड़ा जाने लगा और निजी क्षेत्र को मुनाफा कमाने के अधिक अवसर मुहैया करवाये जाने लगे। देश में 2014 के चुनावों में विजय हासिल करने के बाद भाजपा सरकार ने कांग्रेस सरकार द्वारा शुरू की गई निजीकरण की नीतियों को बहुत तेज रफ़्तार के साथ आगे बढ़ाया। जितने सार्वजनिक उपक्रम पिछले 65-70 वर्षों में खड़े किये गए थे, उन्हें धड़ाधड़ निजी हाथों में सौंपा जाने लगा। कोविड आने पर महसूस किया गया कि सार्वजनिक क्षेत्र की स्वास्थ्य सेवाएं कितनी मददगार हुईं, लेकिन मुनाफाखोर पूंजीवादी

व्यवस्था ने उसे भी आपदा में अवसर की तरह देखा और निजी क्षेत्र के अस्पतालों और दवा कंपनियों को अकल्पनीय फायदा पहुंचाया।

फिर भी आमतौर पर जो अनुभव कोविड काल का रहा, उसमें देखा गया कि न केवल गरीब लोगों के लिए निजी स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध नहीं थीं, बल्कि जो पैसे खर्च करने में सक्षम थे, उन्हें भी निजी स्वास्थ्य सेवाओं से वो सेवाएं नहीं मिल सकीं जिनके लिए वो बरसों-बरस भारी रकम लुटाते रहे हैं। ज़्यादातर वही सरकारी अस्पताल, सरकारी डॉक्टर और स्टाफ काम आया जिसे निजीकरण के युग में हाशिये पर धकेला जा रहा था, जिनकी जमीनें बेची जा रही थीं, जिनके स्टाफ को ठेके पर रखा जा रहा था और जहां से दवाइयां मुफ़्त देना बंद किया जा रहा था।

1990 के दशक के बाद से सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं के संजाल को धीरे-धीरे नाकारा करना शुरू कर दिया गया था। अस्पतालों से दवाएं गायब हो गई थीं, जांचों के लिए मरीजों को निजी पैथोलॉजी लेबोरेटरी भेजा जाने लगा था। एक्स-रे, ईसीजी मशीनें या अन्य जरूरी उपकरण भी सरकारी अस्पतालों में ठीक-ठाक हालत में नहीं मिलते थे। सरकारी अस्पतालों के बजट में सरकार ने कटौती कर दी थी। कुल मिलाकर, धीरे-धीरे सरकारी अस्पतालों से मरीजों का विश्वास कमजोर कर दिया गया था और क़रीब-क़रीब 80 फीसदी मरीज मजबूरी में निजी स्वास्थ्य सेवाओं की तरफ मुड़ गए थे।

कोविड की दूसरी लहर में सरकार ने निजी अस्पतालों को स्वास्थ्य सेवाएं देने के लिए बाध्य किया। बाध्यता के चलते निजी अस्पतालों ने अपने दरवाजे तो खोल दिए, लेकिन सब जानते हैं कि कोविड के मरीज का निजी अस्पतालों में इलाज का पैकेज लाखों रुपये रोज का था। पंजाब, दिल्ली और केरल ही ऐसे राज्य थे जहां सरकार ने बेतहाशा महंगे कर दिए गए इलाज के मामले में कुछ हस्तक्षेप किया और मरीजों को राहत दिलवाई। दवाओं की जमाखोरी खुलेआम हुई। राजनेताओं ने जरूरत न होने पर भी अपने क्षेत्र के मतदाताओं को उपकृत करने के लिए जिस दवा का नाम चला, वो थोक में खरीदकर रख ली। रेमडेसिवीर के नाम पर सादे पानी के इंजेक्शन भी जरूरतमंदों को एक-एक लाख रुपये में बेच दिए गए।

इन सभी कारणों से सरकारी अस्पतालों पर काफी अतिरिक्त भार आ गया, जबकि उन्हें 1991 के बाद से धीरे-धीरे कमजोर करने की प्रक्रिया पहले ही जारी थी। जिन मरीजों को टेस्ट में कोरोना पॉजिटिव आया, लेकिन कोई और बीमारी का लक्षण उन्हें नहीं था, उन्हें भी सरकारी अस्पतालों में भर्ती कर दिया गया। नतीजा ये हुआ कि जो छोटी-मोटी बीमारी के भी मरीज थे, जिनका सामान्य स्थितियों में घर पर ही इलाज हो जाता था, लेकिन कोरोना के डर ने उन्हें अस्पतालों की ओर दबढ़ने पर मजबूर कर दिया था। बाद में, ऑक्सीजन सिलिंडरों की जो त्राहि-त्राहि मची, निजी अस्पतालों ने ना केवल मुनाजा कमाया, बल्कि कुछ अस्पतालों ने

तो ऑक्सीजन आपूर्ति बंद करके मरीजों की जान से भी खिलवाड़ किया। इसी तरह वैक्सीन बनाने के मामले में भी निजी कंपनियों के हित आगे रखे गए।

कोरोना ने निजी स्वास्थ्य व्यवस्था के असली कुरूप चेहरे को देश के आम लोगों के सामने उघाड़कर रख दिया था, लेकिन सरकार और प्रशासन ने आम लोगों के असंतोष और गुस्से को सोशल मीडिया के जरिये विभाजित और विमुख कर दिया। यह बात लोगों के सामने बार-बार रखने की जरूरत है कि सबसे भीषण स्वास्थ्य संकट के दौरान सबसे ज़्यादा काम में आने वाली व्यवस्था वही सार्वजनिक स्वास्थ्य की सरकारी व्यवस्था थी जिसे आजादी के बाद स्थापित किया गया था।

इन्हीं सब वजहों से स्वास्थ्य का मुद्दा पहली बार जोरदार राजनीतिक मुद्दा भी बना, हालांकि मीडिया और राजनीति के गठजोड़ ने इसे ज़्यादा देर तक बना नहीं रहने दिया। फिर भी कहीं-न-कहीं जो सरकारी उपक्रमों को कामचोर और निजी उपक्रमों को अधिक योग्य और सक्षम बताते नहीं थकते थे, उन्हें भी लगा कि अगर निजी क्षेत्र और सार्वजनिक क्षेत्र को साथ-साथ समानांतर चलाया गया तो निजी क्षेत्र, येन-केन प्रकारेण मुनाफे को बढ़ाने की प्रवृत्ति के कारण, सार्वजनिक क्षेत्र को हाशिये पर धकेलता जाता है। अगर स्वास्थ्य का क्षेत्र ही मुनाफे पर आधारित हो जाएगा तो हमें एक बीमार और अस्वस्थ्य आबादी वाला देश बनने से कौन रोक पाएगा?

हमें एक मजबूत राष्ट्रीय स्वास्थ्य व्यवस्था की आवश्यकता है, जिसमें देश के सभी संसाधनों को लोगों की उत्तम सेवा के लिए उपयोग में लाया जा सके। बेशक सरकार को अधिक खर्च करना होगा और इसके लिए अमीर वर्ग पर ज्यादा कर/टैक्स लगाना होगा। सालों से उन्हें सभी तरह के कर-लाभ, रियायतें, कर-मुक्त अवधि, कर-कटौती, बेलआउट और अन्य कई लाभ दिए गए हैं। सुपर रिच टैक्स एक ऐसा उपाय है, वेल्थ टैक्स और इनहैरिटेंस टैक्स (विरासत-कर) भी लगा सकते हैं। वैसे भी टैक्स का स्लैब जो जितना ज़्यादा अमीर है, उसके लिए उतना ही कम है। सरकार जो भी योजनाएं लाती है, उसमें गरीबों का पैसा अंत में अमीरों की दवाई में और अमीर डॉक्टरों और अमीर हॉस्पिटलों की जेब में जाता है।

# उपलब्धियों भरे बदलाव की यात्रा

डॉ. कुमारेन्द्र सिंह सेंगर
स्वतंत्र लेखक

जिस देश का अपना एक गौरवशाली इतिहास रहा है, उसी देश की महज 75 वर्ष की यात्रा का जश्न बढ़े जोर-शोर से मनाया जाना अपने आपमें अजब लगता है. इसके बाद भी इस अजब से लगने वाली यात्रा की कहानी को याद रखना भी आवश्यक है. ऐसा इसलिए क्योंकि गौरवशाली परम्परा, संस्कृति, सभ्यता होने के बाद भी देश सैकड़ों वर्षों तक गुलामी में रहने का कलंक आज तक ढो रहा है. आजादी के जश्न के द्वारा इस गुलामी भरे दंश को भुलाने का प्रयास किया जाता है या फिर वर्तमान पीढ़ी को एक सबक सिखाने की कोशिश होती है, ये किसी और विमर्श का विषय हो सकते हैं. वर्तमान समय वाकई गौरव करने का इसलिए भी है क्योंकि वैश्विक पटल से अनेकानेक सभ्यताएँ लुप्त हो गईं किन्तु भारतीय संस्कृति, सभ्यता तमाम सारी चोटों, आघातों को सहने के बाद भी अपनी वैभवशाली गाथा को साथ लिए आगे ही बढ़ रही है.

वर्तमान में हम सभी आजादी के अमृत महोत्सव आयोजन के द्वारा अपनी आजादी के 75 वर्षों की यात्रा का स्मरण कर रहे हैं. वर्तमान के सापेक्ष जब इसी कालखंड पर दृष्टि डालते हैं तो बहुत सारा सुखद एहसास रोम-रोम को पुलकित कर देता है. बावजूद बहुत सारी उपलब्धियों के आज भी बहुत सारे लोग ऐसे हैं जो गुलामी के दिनों को, अंग्रेजों के शासन को सही ठहराते हैं. ऐसे तमाम लोगों के विचारों को जानने-सुनने के बाद सवाल उठने स्वाभाविक हैं कि क्या वाकई देश ने पिछले 75 वर्षों में कुछ पाया नहीं है? क्या देश ने इस यात्रा के किसी तरह की कोई उपलब्धि हासिल नहीं की है? क्या इन 75 वर्षों में हमने जो पाया है वह अंग्रेजी शासन की अपेक्षा कमतर है?

ऐसे सवालों को उन्हीं के दिमाग में छोड़ते हुए आगे बढ़ते हैं. विगत 75 वर्षों की उपलब्धियों, अनुपलब्धियों को यदि समग्र रूप में देखा जाये तो हम लोगों को निराशा नहीं होगी. कृषिप्रधान देश कहे जाने के बाद भी आज देश का आर्थिक ढाँचा मात्र कृषि आधारित नहीं है. जिस समय देश आजाद हुआ, उस समय देश की अर्थव्यवस्था पूरी तरह कृषि पर निर्भर थी और इसकी हिस्सेदारी 53.7 प्रतिशत थी. आज यह महज 18.8 प्रतिशत रह गई हो मगर इसके सापेक्ष अन्य क्षेत्रों ने अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान की है. वर्तमान में

उत्पादन क्षेत्र की हिस्सेदारी 26.9 प्रतिशत, सर्विस सेक्टर का भाग 54.3 प्रतिशत है. जीडीपी में व्यापार की हिस्सेदारी भी विगत वर्षों में बढ़ी है. वर्तमान में इसकी हिस्सेदारी 36.5 प्रतिशत हो चुकी है.

शिक्षा किसी भी समाज के विकास हेतु अत्यावश्यक अंग है. इसके बिना उन्नति, विकास की कल्पना करना संभव नहीं. नालंदा, तक्षशिला जैसे शैक्षणिक संस्थानों के नष्ट कर दिए जाने के बाद ऐसा महसूस हो रहा था कि शायद देश का शैक्षणिक विकास बहुत देर में हो. इस आशंका को विगत वर्षों की यात्रा में गलत सिद्ध किया गया है. प्राथमिक क्षेत्र से लेकर उच्च शिक्षा और शोध क्षेत्र तक देश में पर्याप्त विकास हुआ है. आजादी के समय देश में साक्षरता दर लगभग 18.3 प्रतिशत थी जो वर्तमान में लगभग 78 प्रतिशत है. चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में 1950 में देश में केवल 28 मेडिकल कॉलेज थे. आज यदि मेडिकल कॉलेज की संख्या निकाली जाये तो पूरे देश में 612 मेडिकल कॉलेज हैं, जिनमें 322 सरकारी और 290 निजी हैं. क्या इसे विकास या उपलब्धियों के रूप में नहीं देखा जायेगा? इसके अलावा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, भारतीय प्रबन्ध संस्थान, कृषि संस्थान, उच्च शैक्षणिक संस्थानों ने भी संख्यात्मक, गुणात्मक रूप में पर्याप्त विकास किया है.

यातायात क्षेत्र को भी उपलब्धियों की दृष्टि से नजरंदाज नहीं किया जा सकता है. हाँ, यहाँ एक बात स्मरणीय है कि इस क्षेत्र में विकास गति धीमी अवश्य रही मगर निरंतर विकास पथ पर यह क्षेत्र अग्रसर रहा. सड़कें हों या रेलमार्ग सभी में लगातार विकास होता रहा. देश में 3.3 मिलियन किमी सड़क नेटवर्क है जो विश्व में दूसरा सबसे बड़ा नेटवर्क है. वर्तमान में एक अनुमान के अनुसार सड़क परिवहन द्वारा लगभग 65 प्रतिशत माल ढोया जा रहा है. इसी तरह यदि यात्री यातायात के आँकड़ों को देखें तो लगभग 87 प्रतिशत यात्री यातायात सड़कों द्वारा होता है. स्वर्णिम चतुर्भुज योजना और एक्सप्रेस वे का निर्माण भारतीय सड़क जाल के विकास की कहानी कहते हैं. सड़कों के साथ ही माल, यात्री यातायात की सहायक बनी रेलवे को यदि ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो भारतीय उप-महाद्वीप में प्रथम रेलगाड़ी महाराष्ट्र में मुम्बई और ठाणे के बीच लगभग 34 किमी लम्बे रेलमार्ग पर 16 अप्रैल 1853 को चलाई गई थी. आज सम्पूर्ण देश में रेलों का सघन जाल बिछा हुआ है. भारतीय रेल व्यवस्था के अन्तर्गत वर्तमान में सात हजार से अधिक रेलवे स्टेशन और चौंसठ हजार किमी से अधिक लम्बा रेलमार्ग है. हजारों की संख्या में ही रेलवे इंजन, मालगाड़ियाँ, यात्री गाड़ियाँ रेलवे की संपत्ति के रूप में देश की धरोहर हैं. इनके माध्यम से रोज ही लाखों यात्री अपने गंतव्य तक की यात्रा करते हैं. आजादी के बाद से लगातार अनेकानेक क्षेत्रों में विकास और बदलाव होते रहे हैं. अनेक नए-नए क्षेत्रों का उदय हुआ. तकनीक के मामले में जबरदस्त बदलाव देखने को मिले. किसी एक समय में दूरसंचार माध्यम की अपनी सीमितता थी वहीं आज इस क्षेत्र में

क्रांतिकारी बदलाव देखने को मिल रहे हैं. हमारे समाज में गिने-चुने लोगों के घरों में बेसिक फोन की सुविधा हुआ करती थी जो आज हर हाथ में मोबाइल के रूप में परिवर्तित हो गई है. इंटरनेट सुविधा, उसकी स्पीड के द्वारा न केवल धरती पर वरन अन्तरिक्ष क्षेत्र में भी व्यापक बदलाव देखने को मिले. ज्ञान-विज्ञान में भी देश में हुए बदलाव प्रत्येक नागरिक को गौरवान्वित कर सकते हैं. किसी समय में सेटेलाईट भेजे जाने के लिए हम दूसरे देशों की तकनीक पर निर्भर हुआ करते थे जबकि आज हमारे केंद्र अन्य देशों को यह सुविधा उपलब्ध करवा रहे हैं. परमाणु परीक्षण, टेस्ट ट्यूब बेबी, मंगल ग्रह का अभियान, बुलेट ट्रेन की तैयारी, ओलम्पिक में पदक जीतना, जम्मू-कश्मीर से धारा 370 का हटना आदि वे स्थितियाँ हैं जिनको उपलब्धि के रूप में ही स्वीकारा जाता है.

कहते हैं न कि सफेद पटल पर एक छोटा सा काला बिंदु भी बहुत दूर से चमकता है, कुछ ऐसा हाल इन उपलब्धियों का है, लोगों की मानसिकता का है. ये सच है कि तकनीकी विकास के दौर में हमारे यहाँ सामाजिक विकास में गिरावट देखने को मिली है. साक्षरता का स्तर बढ़ा है मगर स्त्री-पुरुष लिंगानुपात में अंतर भी बढ़ा है, महिलाओं-बच्चियों के साथ दुर्व्यवहार की घटनाएँ बढ़ी हैं. एक तरफ हमें अन्तरिक्ष में अपने कदम रखे हैं तो दूसरी तरफ हमने अपनी ही धरती को जबरदस्त नुकसान पहुँचाया है. कृषि, खाद्यान्न के मामले में हम यदि आत्मनिर्भर होते जा रहे हैं तो हम जनसंख्या पर नियंत्रण नहीं रख सके हैं. हमारा आर्थिक ढाँचा वैश्विक स्थितियों को देखते हुए बहुत सुदृढ़ है मगर लगातार होते घोटालों को हम नहीं रोक सके हैं. मोबाइल, इंटरनेट क्रांति ने समूचे विश्व को एक ग्राम की तरह बना दिया है मगर आपसी भाईचारे-सौहार्द्र को हम मजबूत नहीं कर सके हैं.

ये कुछ पहलू हैं, और भी हैं, जिनके आधार पर बहुत सारे लोग देश की वास्तविक उपलब्धियों को विस्मृत कर जाते हैं. कतिपय राजनैतिक मूल्यों की गिरावट के कारण उनको अंग्रेजी शासन ज्यादा सुखद लगता है मगर वे भूल जाते हैं कि ये हमारी लोकतान्त्रिक शक्ति है कि यहाँ अंतिम पायदान के व्यक्ति तक को भी अवसर उपलब्ध हैं. ये और बात है कि संवैधानिक नियमों की आड़ में यहाँ एक निर्दलीय विधायक भी मुख्यमंत्री बन जाता है मगर यही संवैधानिक खूबसूरती भी है कि कोई ऑटो चलाने वाला, आदिवासी समाज से आने वाला, अत्यंत पिछड़ी पृष्ठभूमि से आने वाला भी जनप्रतिनिधि बन कर सदन में पहुँचता है, देश का प्रथम नागरिक बनता है. निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि विगत 75 वर्षों की भदलाव भरी यात्रा सुखद रही है, उपलब्धियों भरी रही है. इस यात्रा में यदा-कदा मिलते झटकों को भी सफर का हिस्सा समझते हुए उनको स्वीकार करना होगा, उनका भी एहसास करते हुए आगे बढ़ना होगा.

# बहन का सम्मान और भाई का चरित्र दोनों कायम रहे

स्मृति आदित्य
वरिष्ठ पत्रकार, लेखक, चिंतक

*रक्षाबंधन के शुभ पर्व पर बहनें अपने भाई से यह वचन चाहती हैं कि आने वाले दिनों में किसी बहन के तन से वस्त्र न खींचा जाए फिर कोई बहन दहेज के लिए मारी ना जाए....*

छत की सीढ़ियों पर रूठकर बैठी एक नन्ही बहना। उसके इस रूठने से सबसे ज्यादा व्यथित अगर कोई है तो वह है उसका भाई। भोजन की थाली लेकर उसके पास जाने वाला पहला व्यक्ति होता है, उसका भाई।

स्कूल से अपनी बहन को लेकर आता एक छोटा-सा भाई। भाई के छोटे लेकिन सुरक्षित हाथों में जब बहन का कोमल हाथ आता है तब देखने योग्य होता है, भाई के चेहरे से झलकता दायित्व बोध, उठते हुए कदमों में बरती जाने वाली सजगता और कच्ची-कच्ची परेशान आंखें। घर पर जो बहन भाई से ठुनकी-ठुनकी रहती होगी, बीच राह पर वही भोली-सी हिरनी हो जाती है।

बच्चों का एक झुंड। खेल में मशगूल। तभी सबको लगी प्यास। भाई ने हमेशा की तरह छोटी बहन को आदेश दिया। नन्हे हाथों में जग और गिलास पकड़े टेढ़ी-मेढ़ी चाल से धीरे-धीरे आती है बहन और...और... धड़ाम!!

सबके सामने भाई को मिली फटकार। बहन ने कोहनी छुपाते हुए, आंसुओं को रोकते हुए कहा - भाई ने नहीं भेजा था, मैं खुद गई थी पानी लेने।

कक्षा पहली की नन्ही छात्रा अनुष्का को प्रिंसिपल ने ऑफिस में बुलाकर कहा - तुम्हारा छोटा भाई आशु क्लास में सो गया है उसे अपनी क्लास में ले जाओ...! अनुष्का की गोद में सोया है आशू और वह बोर्ड पर से सवाल उतार रही है।

दूसरी की छात्रा श्रुति रोते हुए अपने बड़े भाई श्रेयस के पास पहुंची। कक्षा के बच्चे उसके नाम का मजाक उड़ाते हैं। उसे सूती कपड़ा कहते हैं। तीसरी कक्षा के बहादुर भाई ने कहा - छुट्टी के बाद सबके नाम बताना, सबको ठीक कर दूंगा। श्रुति आश्वस्त है अब। छुट्टी होने पर श्रेयस ने रोक लिया सब चिढ़ाने वाले बच्चों को। पहले तो बस्ते से धमाधम मारा-पीटी, फिर सब पर स्याही छिड़ककर बहन का हाथ पकड़कर भाग आया

भाई। बहन खुश है, भाई ने बदला ले लिया। कल की कल देखेंगे।

पहली बार कॉलेज जा रही थी बहन। भाई ने बाइक पर बैठाया और रास्ते में कहा - तू कब बड़ी हो गई मुझे तो वही दो चोटी वाली बस्ता घसीटकर चलने वाली और चॉक खाने वाली याद है। इतनी जल्दी तू इत्ती बड़ी हो गई, पता ही नहीं चला।

बहन बिदा हो रही थी लेकिन भाई धर्मशाला जल्दी खाली करने की चिंता में व्यंजनों के कढ़ाव-तपेले आदि उठा-उठा कर रख रहा था। बहन ने सुबकते हुए भाई को याद किया। भाई ने सब्जी-दाल से सने हाथों से ही बहन को गले लगा लिया।

बहन ने अपनी कीमती साड़ी को आज तक ड्रायक्लीन नहीं करवाया। वह कहती है, जब भी उस साड़ी पर सब्जी के धब्बे देखती हूं। भाई का वह अस्त-व्यस्त रूप याद आ जाता है, मेरी शादी में कितना काम किया था भाई ने।

भाई और बहन का रिश्ता मिश्री की तरह मीठा और मखमल की तरह मुलायम होता है। रक्षाबंधन का पर्व भाई-बहन के इसी पावन रिश्ते को समर्पित है। इसी त्योहार पर इस रिश्ते की मोहक अनुभूति को सघनता से अभिव्यक्त किया जाता है।

भारत में यदि आज भी संवेदना, अनुभूति, आत्मीयता, आस्था और अनुराग बरकरार है तो इसकी पृष्ठभूमि में इन त्योहारों का बहुत बड़ा योगदान है। जो लंबी डगर पर चिलचिलाती प्रचंड धूप में हरे-भरे वृक्ष के समान खड़े हैं। जिसकी घनी छांव में कुछ लम्हें बैठकर व्यक्ति संघर्ष पथ पर उभर आए स्वेद बिंदुओं को सुखा सके और फिर एक शुभ मुस्कान को चेहरे पर सजाकर चल पड़े जिंदगी की कठिन राहों पर, जूझने के लिए।

रक्षाबंधन के शुभ पर्व पर बहनें अपने भाई से यह वचन चाहती हैं कि आने वाले दिनों में किसी बहन के तन से वस्त्र न खींचा जाए फिर कोई बहन दहेज के लिए मारी ना जाए, फिर किसी बहन का अपहरण ना हो, फिर किसी बहन के चेहरे पर तेजाब न फेंका जाए। और ... और फिर कोई बहन खाप के फैसले से भाई के ही हाथों ना मारी जाए।

यह त्योहार तभी सही मायनों में खूबसूरत होगा जब बहन का सम्मान और भाई का चरित्र दोनों कायम रहे। यह रेशमी धागा सिर्फ धागा नहीं है। राखी की इस महीन डोरी में विश्वास, सहारा और प्यार गुंफित हैं और कलाई पर बंधकर यह डोरी प्रतिदान में भी यही तीन अनुभूतियां चाहती है। पैसा, उपहार, आभूषण, कपड़े तो कभी भी, किसी भी समय लिए-दिए जा सकते हैं लेकिन इन तीन मनोभावों के लेन-देन का तो यही एक पर्व है - रक्षाबंधन...

# सबसे सच्ची भाई-बहन की दोस्ती....

त्योहार रिश्तों की खूबसूरती को बनाए रखने का बहाना होते हैं। यूं तो हर रिश्ते की अपनी एक महकती पहचान होती है। भाई-बहन का रिश्ता एक भावभीना अहसास जगाता है। रक्षाबंधन का पर्व इसी रेशमी रिश्ते की पवित्रता का प्रतीक है। इसी माह में मित्रता दिवस है और इसी माह रक्षाबंधन,आइए बात करते हैं दोनों त्योहारों के मद्देनजर भाई और बहन की दोस्ती की.... यह रिश्ता जीवन के विविध उतार-चढ़ाव से गुजरते हुए भी एक गहरे, बहुत गहरे अहसास के साथ हमेशा ताजातरीन और जीवंत बना रहता है। मन के किसी कच्चे कोने में बचपन से लेकर युवा होने तक की, स्कूल से लेकर बहन के बिदा होने तक की और एक-दूजे से लड़ने से लेकर एक-दूजे के लिए लड़ने तक की असंख्य स्मृतियाँ परत-दर-परत रखी होती है। बस, भाई-बहन के फुरसत में मिलने भर की देर है, यादों के शीतल छींटे पड़ते ही अतीत के केसरिया पन्नों से चंदन-बयार उठने लगती है। एक ऐसी सौंधी-सुगंधित सुवास जो मन के साथ-साथ पोर-पोर महका देती है।

## सुहाना बचपन : सहज मनोविज्ञान

भाई का नन्हा-सा दिल पहली बार जब छोटी-सी गुलाबी-गुलाबी बहन को देखता है तब अनजानी, अजीब-सी अनुभूतियों से भर उठता है। थोड़ी-सी जिम्मेदारी, थोड़ी-सी चिंता, थोड़ा-सा प्यार, थोड़ी-सी खुशी, थोड़ी-सी जलन, थोड़ा-सा अधिकार ऐसी ही मिलीजुली भावनाओं के साथ भाई-बहन का बचपन गुलजार होता है। मनोविज्ञान कहता है, अक्सर बड़े भाई-बहन अपने नवागत भाई या बहन को लेकर असुरक्षित महसूस करते हैं। वह मन ही मन खुद को उपेक्षित और अवांछित भी समझ सकते हैं। यहां परिवार और परवरिश दोनों की अहम भूमिका होती है। घर के बड़े हंसी-मजाक में भी कभी बच्चे को यह अहसास ना कराएं कि नए बच्चे के आगमन से उसकी अहमियत कम हो जाएगी। इस उम्र में बैठा उनका यह डर ग्रंथि बनकर रिश्तों की डोर कमजोर कर सकता है। भाई और बहन के बीच स्वस्थ रिश्ते की बुनियाद रखने की जिम्मेदारी माता-पिता की होती है। खासकर भाई अगर बड़ा है तो उसे नई बहन के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए शिक्षा दें कि यह नन्ही जान उसके साथ खेलने और पढ़ने के लिए लाई गई है। उसके अकेलेपन को दूर करने के लिए उसे भेजा गया है। जैसे-जैसे वह बड़ी होगी उसकी खुशियों का सबब बनेगी। अगर बहन बड़ी है तो उसे यह अहसास दिलाएं कि छोटा भाई आने से उसको मिलने वाले प्यार में कमी नहीं होगी ना व्यवहार में बदलाव आएगा। लड़कियां यूं भी मानसिक रूप से इस मामले में मजबूत होती है उन्हें बस इतना भर बताया जाना चाहिए कि इस छोटे प्राणी को अभी ज्यादा देखभाल की जरूरत है। भाई-बहन के रिश्ते के मनोविज्ञान का बस इतना ही सच है कि उन्हें स्वस्थ वातावरण में बिना किसी भेदभाव के खिलने-खेलने-पनपने का अवसर दीजिए। प्यार की सौगात से तो ईश्वर ने स्वयं उन्हें नवाजा है आप उन्हें उस प्यार को महकाने की खुशनुमा भावनात्मक बगिया दीजिए।

## नटखट बचपन : नन्ही शैतानियां

याद कीजिए अपने बचपन की शरारतें। क्या भाई-बहन के बिना वे इतनी मोहक और मासूम हो सकती थी? नहीं ना? ठीक इसी तरह आज के बचपन को भी खुलकर जीने दीजिए। बचपन की मयूरपंखी स्मृतियां उनके भविष्य की भी मुस्कान बने इसलिए बहुत जरूरी है कि बड़ा भाई अपनी छुटकी बहन के उल्टे-सीधे नाम रखें, बहुत जरूरी है कि दोनों साथ-साथ उछले-कूदे, गिरे-पड़े, धमाधम धिंगामुश्ती करें। जरूरी है कि पेड़ पर चढ़े और मिट्टी में सने, जरूरी है कि एक दूसरे के खिलौनों को तोड़े-छुपाए। सोचिए अगर आपने यह सब उन्हें नहीं करने दिया तो कल बड़े होकर वे क्या याद करेंगे? यह कि मेरा बस्ता तुम्हारे बस्ते से ज्यादा भारी था, या यह कि मैंने तुमसे ज्यादा कोचिंग ली, या यह कि कंप्यूटर का माउस तुमने तोड़ा था और मार मुझे पड़ी थी। इन यादों में बचपन तो होगा लेकिन टूटते-बिखरते अनारों से ठहाके नहीं होंगे, बेसाख्ता फूट पड़ती हंसी के फव्वारे नहीं होंगे, मीठी चुटकियां नहीं होगी, चटपटी सुर्खियां नहीं होंगी। इन बातों में वह बचपन होगा जो नटखट लम्हों और भोली नादानियों से जुदा होगा। इसलिए सभी नन्हे भाई-बहन को हर पल साथ में ही तीखी-मीठी नोकझोंक के साथ गुजारने दीजिए। उनके रिश्तों के अमलतास हमेशा खिले रहेंगे।

## त्योहार के बहाने : रिश्ते नए-पुराने

आज सारे त्योहार तकनीक और आधुनिकता की भेंट चढ़ गए हैं। रक्षाबंधन का त्योहार भी अछूता नहीं रहा। लेकिन इसके बावजूद सबसे बड़ी बात यह है कि रिश्तों की गर्माहट, आंच, तपन या उष्मा कुछ भी कह लीजिए, वह बरकरार है। आज भी भाई का मन अपनी बहन के लिए उतना ही पिघलता है, आज भी बहन का प्यार भाई के लिए उतना ही मचलता है। यह बात और है कि तरीके बदल गए हैं, भावाभिव्यक्तियां बदल गई हैं, अंदाज बदल गए हैं मगर अहसास वही है। चाहे इंटरनेट पर आभासी राखी पहुंचे या मोबाइल पर कोई भावुक-सा मैसेज चमके, चाहे हाथों में प्यारे भैया का टैग लगी राखी हो या लिफाफे में पसीने की कमाई से भीगा शगुन हो। यह प्यारा रिश्ता अपनी गहराई और गंभीरता नहीं भूल सकता।

भावुकता की लहर में यही पंक्तियां उभरती है-

**बहनें चिडिया धूप की, दूर गगन से आए**
**हर आंगन मेहमान-सी, पकड़ो तो उड़ जाए।**

# भारत की शिंडलर्स लिस्ट

***नक्शे पर पाकिस्तान की पैदाइश भारत के विभाजन की हृदयविदारक विभीषिका है, जिसके पीछे भारत में इस्लामी कब्जे के तानाशाहों के आगे एडोल्फ हिटलर केजी वन का शरारती बच्चा है। यहूदियों से बड़े नरसंहार सदियों तक भारत ने भोगे हैं।***

**विजय मनोहर तिवारी**

**25 सालों तक मीडिया में सक्रिय रहे। प्रिंट और टीवी दोनों का अनुभव। 8 किताबें प्रकाशित। वर्ष 2010 से 2014 के बीच लगातार 5 साल तक भारत की 8 बार यात्राएं की हैं। वर्ष 2005 में छपकर आई 'हरसूद-30 जून' को भारतेंदु हरिश्चंद्र अवार्ड मिला। यह एक बांध परियोजना में डूबे गांव-कस्बों की आंखों देखी कहानी है जिस पर प्रसिद्ध कथाकार कमलेश्वर ने एक कहानी लिखी थी। आउटलुक के साहित्य विशेषांक में प्रकाशित इस कथा में विजय मनोहर तिवारी को भी एक पात्र बनाया गया था। वर्ष 2008 में उपन्यास 'एक साध्वी की सत्ता कथा' और 2010 में भोपाल गैस हादसे पर 'आधी रात का सच' प्रकाशित। भारत की यात्राओं पर केंद्रित वृतांत है- 'भारत की खोज में मेरे 5 साल' जिसे मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया। कोरोना के पहले चरण में देशभर में घटी अप्रत्याशित घटनाओं की डायरी 2020 में छपकर आई- 'उफ यह मौलाना'। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय द्वारा स्थापित गणेश शंकर विद्यार्थी राष्ट्रीय सम्मान दिया गया है। यात्रा वृतांत डायरी और रिपोर्ताज में शतत लेखन के लिए हाल ही में मध्य प्रदेश शासन के प्रतिष्ठित शरद जोशी राष्ट्रीय सम्मान के लिए चुने गए हैं। देश के प्रतिष्ठित बहुकला केंद्र भारत भवन के न्यासी और मध्यप्रदेश में राज्य सूचना आयुक्त के पद पर कार्यरत हैं। भारत में इस्लाम के फैलाव पर 30 साल के अध्ययन एवं शोध पर केंद्रित दस्तावेज इसी साल छपकर आ रहा है।**

यहूदियों के नरसंहार पर केंद्रित 'शिंडलर्स लिस्ट' अकेली और अंतिम फिल्म नहीं है, जिसने जातीय घृणा से लबालब भरे एक विक्षिप्त राजनीतिक विचार के घातक प्रभावों को परदे पर प्रस्तुत किया था। यह हिटलर के नाजियों की क्रूरता की कहानी थी। बीते सौ सालों में हिटलर की बेरहमी पर सैकड़ों फिल्में बनी हैं, 'शिंडलर्स लिस्ट' इनमें से ही एक है। हिटलर के मरने के बाद शायद ही कोई दशक ऐसा गुजरा हो, जब दुनिया की किसी न किसी भाषा में सिनेमा ने उसके पापों छुआ न हो। संवेदनशील फिल्मकारों ने अनगिनत कोणों और अनगिनत कथाओं के माध्यम से जातीयता की स्वयंभू श्रेष्ठता के वहशी विचार की परतों को जमकर खोला है।

एडोल्फ हिटलर, जिसे जर्मनी की सत्ता पर सिर्फ 13 साल का समय मिला था, आज तानाशाही और क्रूरता का पर्याय बनकर धरती की स्मृतियों में सुरक्षित एक बदनुमा दाग है। मौत की एक ऐसी मेगा मशीन, जिसने 60 लाख निर्दोष यहूदियों को मरवाने के लिए चौबीस घंटे काम करने वाला एक पूरा तंत्र खड़ा कर दिया था। यातना शिविरों में डाले गए हजारों-हजार यहूदी औरतों, बच्चों ने धीमी गति से अपनी देह में सरकती मौत को देखा और अनुभव किया था। बीसवीं सदी की पहली चौथाई में यह सब उस वक्त हुआ, जब यूरोप ने बहुत सारी मशीनों को ईजाद कर लिया था। कैमरा, उनमें से एक और सबसे महत्वपूर्ण है। मनुष्यता के इतिहास का यह बेरहम दौर तस्वीरों और फिल्मों में भी दर्ज हो पाया।

'शिंडलर्स लिस्ट' 1993 में आई फिल्म है, जब पश्चिम का सिनेमा उद्योग कम्प्यूटर जनित प्रभावों से लैस फिल्में बनाने में भारत से पहले और आगे काफी सक्षम था। रंगीन और थ्रीडी फिल्में आ चुकी थीं। किंतु स्टीवन स्पिलवर्ग ने इसे ब्लैक एंड व्हाइट परदे पर उतारा। सबसे खास, पूरी फिल्म में हिटलर कहीं नहीं है। नाजियों के एक ऑफिस के दृश्य में वह चंद सेकंड के लिए एक तस्वीर में नजर आया है। यह एक ऐतिहासिक और महान फिल्म है, जिसने हिटलर के शिकार यहूदियों की पीड़ा को बहुत गहराई से उकेरा।

हिटलर 56 साल की उम्र में मर गया। सत्ता में 13 साल ही रहा। यहूदियों के ज्यादातर नरसंहार पांच साल के दौरान किए। आज वह धरती पर पैदा हुए नराधम लोगों में सबसे ऊपर गिना जाता है। क्या क्रूर कारनामे करने वाला वह धरती पर अकेला ऐसा था, जिसे

मनुष्यता के नाम पर धब्बा कहा जाए? क्या अपनी नस्ल को शुद्ध, सर्वश्रेष्ठ और सर्वोपरि मानने वाला हिंसा का वह इकलौता स्वयंभू पैगंबर था, जिसके पहले या बाद में उस जैसा कोई नहीं हुआ? क्या दुनिया के दूसरे देशों के ज्ञात इतिहास में ऐसा कोई दूसरा नहीं हुआ, जिसने लाखों लोगों को अपनी सनक का शिकार बनाया हो? अगर आप भारत का तेरह सौ सालों का इतिहास पढ़ लेंगे तो आप ऐसे-ऐसे खलनायकों से रूबरू होंगे, जिनके आगे एडोल्फ हिटलर केजी वन में पढ़ने वाला एक शरारती बच्चा ही नजर आएगा। वह 1947 में 15 अगस्त आते-आते अखंड भारत के टुकड़े होने की ह्दय विदारक पूर्व पीठिका है। 712 में सिंध से लेकर 1193 की दिल्ली तक और फिर आगे की छह सदियों में अंग्रेजों के आने तक देश के कोने-कोने में वे तारीखें और तारीखवार ब्यौरे दस्तावेजों पर इस्लामी फतह के कारनामों की तरह शान से दर्ज किए गए हैं।

बस हमने उन्हें पढ़ा नहीं है। हमें वह पढ़ाया नहीं गया है। इसलिए हम भी तानाशाही के नाम पर अकेले एक हिटलर को कोसकर मनुष्यता के साथ बरती गई अकथनीय क्रूरता के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करके फारिग हो जाते हैं। बस हमें यह ज्ञात नहीं है कि हमारे आसपास अनगिनत हिटलरों ने बिल्कुल उसी बेरहमी से खून बहाया है, जैसा यहूदियों के यातना शिविरों में हमने देखा।

40 पीढ़ियों तक एकतरफा हिंसा के वे निर्दोष भारतीय शिकार हमारे शांतिप्रिय पूर्वज थे, जो लगातार लड़ते, भिड़ते, मरते, कटते रहे लेकिन अपने धर्म और अपनी परंपराओं को बचाए भी रहे। जिस पीढ़ी में जो कमजोर पड़ गया, उसने न चाहते हुए भी अपना धर्म और अपनी पहचान को अपने ही हाथों से खो दिया और भटकी हुई याददाश्त के साथ वह भी उन हिटलरों का हिस्सा बन गया। वह छल और बल से भारत को रसातल में पहुंचाने वाला एक काला कालखंड है, जो एक लंबी स्याह रात की तरह भारत पर छा गया था। वह हिस्ट्री ऑफ इंडिया नहीं है, वह क्राइम हिस्ट्री ऑफ इंडिया है।

15 अगस्त के आसपास आकर भारत पर सदियों तक ढाए गए उन अपराधों की चरम परिणति विभाजन की विभीषिका है। अगर स्वतंत्र भारत में भारत के बीते हजार सालों का असल इतिहास स्कूल-कॉलेजों में पढ़ाया गया होता तो कुछ अलग तरह का भारत बनता। अपने इतिहास के प्रति सजग, अपने पुरखों की भोगी हुई पीड़ा के प्रति संजीदा, अपने वर्तमान के प्रति सावधान और अपने भविष्य के प्रति चिंतित भारत। देश के टुकड़े होना एक विभीषिका थी, लेकिन इसके बावजूद आंखों देखी मख्खी निगलने वाली नीतियों ने विभीषिका के विष बीजों की नर्सरियां तैयार करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। किसी राष्ट्र के सच्चे नीति-निर्माता सौ साल बाद की असलियत को देखकर कमान संभालते हैं। दुर्भाग्य से हमारे राष्ट्र निर्माताओं की दृष्टि ज्यादा ही मंद निकली। उनकी आंखें चश्मों के बाहर न तो बहुत दूर का देखने में सक्षम थीं और न ही उन्हें अपने आस्तीनों की सरसराहट अनुभव हो रही थी। वे बिल्कुल ही अलग दुनिया में थे।

सोशल मीडिया के आज के दौर में सूचनाओं और तथ्यों तक पहुंच घर बैठे आसान हुई है। अब दूर गांव में बैठा एक कम पढ़ा लिखा आदमी भी इतिहास के उन अनछुए अध्यायों पर बहुत कुछ देख पा रहा है, सुन पा रहा है और उन पर चर्चा कर रहा है। वह हमारे तथाकथित राष्ट्रनायकों की करतूतों को भी जान गया है और वह नकली नेरेशन भी बेनकाब हो गया है, जिसने भारत के इतिहास के हिटलरों को आदर्श शासकों की तरह पेश किया था। आज चारों खाने चित्त पड़े मुंबई सिनेमा उद्योग के किसी माई के लाल शोमैन में दम नहीं है कि वह भारत के सिर पर मौत की तरह छाई रही उन रक्तरंजित सदियों में से किसी एक का एक मामूली टुकड़ा उठाकर भी अपनी कोई 'शिंडलर्स लिस्ट' बना पाए।

'कश्मीर फाइल्स' जैसी हजारों फाइलों के पन्ने इतिहास में फड़फड़ा रहे हैं, जिन पर सेक्युलरिज्म का भारीभरकम पेपरबेट रख दिया गया था। भारत की करुण कथा के खलनायक अकेले अंग्रेज नहीं हैं, जिनसे किसी मिलेजुले संघर्ष से आजादी पा ली गई। तिरंगा केवल दिखावे का प्रसंग नहीं है। वह जख्मों से भरे भारत के टूटफूटकर उठ खड़े होने और अपने पैरों पर अपनी स्वतंत्र यात्रा की घोषणा का महान् प्रतीक है। तिरंगे की शान में सिर ऊंचा करते हुए हर भारतीय की आंखों में 1947 के पहले और बाद के इतिहास की झलक आंसुओं में झिलमिलानी चाहिए। वह सदियों तक देश के कोने-कोने में क्रूरता के शिकार बनाए उन अनाम पुरखों का स्मरण होगा, जिनके कटे हुए सिरों की मीनारें और चबूतरे बनाए गए। जिनके जौहर का धुआं आसमान में सदियों तक छाया रहा। जिन्हें गुलामों के बाजारों में भेड़-बकरियों की तरह बेचा गया। जिनके देवस्थानों को अपमानित करने, लूटने और लूटकर बरबाद करने में कहीं कोई दया नहीं दिखाई गई।

हर सदी में भारत के वे घृणित अपराधी जर्मनी के उस एक हिटलर की तरह ऐसे विचार पर सवार थे, जो उनके अनुसार एकमात्र है, सर्वश्रेष्ठ है और दो ही विकल्प देता है-उसे मान लो या मारे जाओ। अगस्त के ये दिन उन अनाम पुरखों के बलिदान के स्मरण के हैं, जिनके नाम किसी 'शिंडलर्स लिस्ट' में दर्ज नहीं हैं और अब तो दुनिया भर में यह लिस्ट अंतहीन है!

# नागरिकों के बुनियादी अधिकार सुनिश्चित करना सरकार की जिम्मेदारी

**- अजीत रानाडे**

**मुफ्त** उपहार के मामलों में सबसे ज्यादा चर्चा का मुद्दा किसानों को निःशुल्क बिजली का रहा है। यह एक ऐसी परिपाटी है जो पंजाब में कई साल पहले शुरू की गई थी और अब अधिकांश राज्यों में फैल गई है। मुफ्त बिजली देने से सिंचाई पंपों, ट्यूबवेलों के अनियंत्रित प्रसार और जल स्तर के खतरनाक रूप से कम होने जैसे कई दुष्प्रभाव हुए हैं। बिजली की मोटरें अक्सर जल जाती हैं जिससे मोटर मरम्मत और रिवाइडिंग का व्यवसाय फल-फूल रहा है।

भारत अप्रैल 2020 के बाद से दुनिया के सबसे बढ़े और सबसे लंबे समय तक चलने वाले मुफ्त भोजन कार्यक्रम को जारी रखने में सफल रहा है। इसे प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (पीएमजीकेएवाई) कहा जाता है। यह योजना सुनिश्चित करती है कि 80 करोड़ से अधिक भारतीयों को पूरी तरह से मुफ्त, प्रति व्यक्ति प्रति माह पांच किलो चावल या गेहूं मिले। योजना 2013 में पारित राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (एनएफएसए) का एक परिवर्तित संस्करण है जिसमें ग्रामीण भारत के तीन चौथाई और शहरी भारत के आधे हिस्से को चावल, गेहूं या मोटा अनाज क्रमशः 3, 2 या 1 रुपये प्रति किलो की दर से देने की गारंटी दी गई है। पीएमजीकेएवाई ने लाभार्थियों को खाद्यान्न वितरण निःशुल्क कर दिया है। इसे कोविड-19 महामारी के दौरान शुरू किया गया था और यह सुनिश्चित किया गया था कि आर्थिक और आजीविका की दुर्दशा खाद्य संकट में न बदल जाए। अब इसकी अवधि दो वर्ष और बढ़ा दी गई है। सरकार वैध रूप से यह भी दावा करती है कि एक निश्चित नकद राशि देने के बजाय खाद्यान्न देने के निर्णय ने परिवारों को खाद्य की कमी के संकट से बचाया है।

एनएफएसए के आलोचकों ने तब मुख्य रूप से इसकी वजह से राजकोष पर पड़ने वाले विशाल बोझ पर ध्यान केंद्रित किया था, लेकिन एक दशक से अधिक समय तक चले आंदोलन के बाद एनएफएसए को

संसद में पारित किया गया था। इस आंदोलन को भोजन का अधिकार अभियान कहा जाता है। अभियान के शुरुआती दिनों में सुप्रीम कोर्ट में एक जनहित याचिका दायर कर देश में भूख और कुपोषण को कम करने के लिए हस्तक्षेप करने की मांग की गई थी। भूख और कुपोषण की यह हालत विशेष रूप से चौंकाने वाली थी क्योंकि इधर सरकारी गोदामों में अनाज के भारी भंडार थे और उधर इसके साथ ही भूख का अस्तित्व भी था।

सभी को राशन सुनिश्चित करने की योजना का बोझ वहन करने के लिए रियायती दरों पर अनाज का उपयोग करने में किसी दिक्कत का कोई सवाल ही नहीं था। एनएफएसए पर दूसरी आपत्ति खुद एक कैबिनेट मंत्री ने की थी जिनकी यह टिप्पणी बहुत प्रसिद्ध हुई थी कि चूंकि एक किलो चावल का उत्पादन करने के लिए 18 रुपये की लागत आती है और राशन की दुकानों पर इसे खरीदने के लिए केवल 3 रुपये खर्च होते हैं तो किसी भी किसान को चावल का उत्पादन करने के लिए प्रोत्साहन क्यों मिलेगा? यह एक चालाकी भरी टिप्पणी थी जो मुफ्त की आदत को प्रोत्साहन देने के प्रभाव की ओर इंगित करता था।

चूंकि सरकार के पास एक बढ़ा खरीद कार्यक्रम है जो आपूर्ति पक्ष को प्रोत्साहन प्रदान करता है और खाद्य सब्सिडी, खरीद की लागत और कम कीमतों पर बेचने से राजस्व के बीच का अंतर है, इसलिए प्रोत्साहन कमी का यह तर्क विफल हो जाता है। रोजगार के अधिकार (मनरेगा), शिक्षा के अधिकार के साथ भोजन का अधिकार, अधिकार-आधारित विकास का एक नया प्रतिमान था जिसे सरकार ने इस सदी के पहले दशक में शुरू किया था। निश्चित रूप से इस नए अधिकार-आधारित दृष्टिकोण की राजकोषीय लागत है लेकिन यदि हम एक समाज के रूप में मानते हैं कि ये बुनियादी अधिकार हैं और चाहे जो भी लागत हो, इन्हें लागू किया जाना चाहिए, तो यह लागत अपरिहार्य है।

महामारी के दौरान न केवल पीएमजीकेएवाई अमूल्य साबित हुआ है, बल्कि मनरेगा ने भी अपनी उपयोगिता सिद्ध की है जो बेरोजगारी बीमा के लिए एक प्रॉक्सी के रूप में कार्य करता है। सरकार ने इस तरह के अधिकारों का विस्तार पिछले एक दशक में किफायती आवास (प्रधानमंत्री आवास योजना), स्वास्थ्य बीमा (आयुष्मान भारत) और शौचालयों (स्वच्छ भारत) के रूप में किया है। इन सभी कार्यक्रमों में सब्सिडी के तत्व हैं और कोई भी इन कार्यक्रमों को मुफ्त उपहार संस्कृति को प्रेरित करने का आरोप नहीं लगा सकता। दरअसल विकसित देशों में बिजली और इंटरनेट तक पहुंच को भी बुनियादी अधिकारों में शामिल किया जा चुका है। स्कैंडिनेविया में जेलों में भी कैदियों को इंटरनेट एक्सेस का अधिकार है। हमारे यहां सब्सिडी, प्रोत्साहन, जरूरी समर्थन, कल्याणकारी योजनाओं पर खर्च, बुनियादी अधिकारों और चुनाव अभियान के वादों पर कभी-कभी होने वाली बहस अक्सर मुफ्त उपहार की निंदा में बदल जाती है।

**कल्याण खर्च के वादों की बराबरी अविचारी मुफ्त संस्कृति या निचले स्तर की ओर जाने से नहीं की जानी चाहिए। यह वास्तव में कानून निर्माताओं, कार्यपालिका और जनता के बीच का मुद्दा है और न्यायपालिका की चिंता का विषय नहीं है। यह समझा जाना जरूरी है कि भारतीय समाज में बढ़ती असमानता को आंशिक रूप से दूर करने के लिए लोक कल्याणकारी खर्च निहायत आवश्यक है।**

सुप्रीम कोर्ट ने पिछले हफ्ते चुनावों के दौरान मतदाताओं को दिये जाने वाले तर्कहीन मुफ्त उपहारों के प्रलोभनों से दूर करने के मुद्दे पर बहस करने के लिए एक विशेष निकाय की स्थापना करने का सुझाव दिया था। एक जनहित याचिका पर सुनवाई के दौरान शीर्ष अदालत ने उक्त सुझाव दिया है। सरकार ने भी इन सुझावों को समर्थन दिया है। जनहित याचिका में मांग की गई है कि राजनीतिक दलों को तर्कहीन मुफ्त उपहारों की पेशकश करने और लोकलुभावन वादे करने से रोका जाए जो मतदाताओं को उनके पक्ष में सूचित निर्णय लेने के लिए प्रेरित करते हैं।

यह पहली बार नहीं है कि मुफ्त उपहार संस्कृति पर रोक लगाने के बारे में कुछ करने के लिए अदालतों के द्वार खटखटाए गये हैं। 2006 में मद्रास उच्च न्यायालय ने चुनाव अभियानों के दौरान मुफ्त मिक्सर, ग्राइंडर और भी कुछ देने की पेशकश करने की प्रथा के खिलाफ एक याचिका स्वीकार की थी। अंततः सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में चुनाव आयोग से आदर्श आचार संहिता में इसके लिए कुछ प्रावधान बनाने के लिए कहा था। उसके बाद तमिलनाडु की अम्मा कैंटीन (अत्यधिक सब्सिडी वाला लगभग मुफ्त पका हुआ भोजन) की योजना आई। उसके बाद अन्य राज्यों ने भी कामकाजी शहरी गरीबों के लिए इस तरह की सब्सिडी वाली कैंटीनों की स्थापना की।

मुफ्त उपहार के मामलों में सबसे ज्यादा चर्चा का मुद्दा किसानों को निःशुल्क बिजली का रहा है। यह एक ऐसी परिपाटी है जो पंजाब में कई साल पहले शुरू की गई थी और अब अधिकांश राज्यों में फैल गई है। मुफ्त बिजली देने से सिंचाई पंपों, ट्यूबवेलों के अनियंत्रित प्रसार और जल स्तर के खतरनाक रूप से कम होने जैसे कई दुष्प्रभाव हुए हैं। बिजली की मोटरें अक्सर जल जाती हैं जिससे मोटर मरम्मत और रिवाइडिंग का व्यवसाय फल-फूल रहा है। इसी तरह भारी सब्सिडी के कारण यूरिया का अत्यधिक उपयोग होता है जिसकी वजह से मिट्टी की लवणता बढ़ जाती है और भूमि परती हो जाती है। रासायनिक खादों के उपयोग को कैंसर की बढ़ती घटनाओं से भी जोड़ा गया है। इनमें से कितने बुरे प्रभावों को तथाकथित मुफ्त उपहार संस्कृति से जोड़ा जा सकता है? और क्या इन बुरे प्रभावों के बारे में अपने मतदाताओं को जानकारी देना निर्वाचित राजनेताओं की जिम्मेदारी नहीं है? यदि मतदाता पार्टियों से चुनावी वादों को पूरा करने की उम्मीद करते हैं तो अदालतें कैसे हस्तक्षेप कर सकती हैं? और अदालतों को हस्तक्षेप क्यों करना चाहिए?

मुफ्त बिजली देने का मामला जांच के लायक है। बिजली की खपत और दूरस्थ माप जैसी तकनीक सीमित मुफ्त बिजली देने को सुनिश्चित करना संभव बनाती है। इससे ज्यादा खपत पर वाणिज्यिक दरें लागू हो सकती हैं या उपयोगकर्ता को कनेक्शन की समाप्ति का सामना करना पड़ता है। अधिकांश गरीब परिवार न्यूनतम खपत सीमा को पार नहीं करेंगे, क्योंकि उनके पास बिजली के ऐसे उपकरण नहीं हैं जो भारी मात्रा में बिजली की खपत करते हैं। इसके अलावा आधे से अधिक बिजली वितरण कंपनियों का नुकसान राज्य सरकारों की सब्सिडी की राशि का भुगतान न करने के कारण हैं। सभी बिजली वितरण कंपनियों का कुल संचित घाटा पिछले पांच वर्षों में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा बट्टे खाते में डाले गए, फंसे ऋणों का केवल दस प्रतिशत है। निश्चित रूप से बैंकों का यह बेहद खराब नुकसान करदाताओं और मतदाताओं के पैसे की गंभीर बर्बादी है। इसलिए तथाकथित मुफ्त के उपहार के खिलाफ राजकोषीय घाटे का तर्क लागू नहीं होता क्योंकि बहुत से ऋ ण बट्टे खाते में या गैर-महत्व सब्सिडी के रूप में बहुत बढ़े राजकोषीय मुफ्त के उपहार के रूप में मौजूद हैं।

आम बजट में कर छूट के संदर्भ में पहले से किए गए राजस्व का खुलासा किया गया है जो सबसे बढ़ी वस्तु यानी सरकार के वार्षिक ब्याज बोझ से भी बढ़ा हुआ करता था। चूंकि भारत का विकास मार्ग, मिश्रित अर्थव्यवस्था (यानी राज्य और बाजार अर्थव्यवस्था के बीच संतुलन) के लोक कल्याणकारी मॉडल के साथ अधिक जुड़ा है इसलिए कल्याण के विभिन्न तरीकों, जैसे खाद्यान्न, स्कूल लंच, स्वास्थ्य देखभाल, प्राथमिक शिक्षा, पाइप पेयजल आदि जैसी चीजों के बुनियादी अधिकारों को सुनिश्चित कर रहे हैं। इसलिए उन पर किया गया व्यय पूरी तरह से उचित है। यह कानून निर्माताओं का काम है कि वे कल्याण खर्च की जरूरतों को पूरा करने और असमानता को कम करने के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष करों का सही मिश्रण कर धन के ऐसे उपयुक्त स्रोत खोजें जिनका अभी इस्तेमाल न किया गया हो। कल्याण खर्च के वादों की बराबरी अविचारी मुफ्त संस्कृति या निचले स्तर की ओर जाने से नहीं की जानी चाहिए। यह वास्तव में कानून निर्माताओं, कार्यपालिका और जनता के बीच का मुद्दा है और न्यायपालिका की चिंता का विषय नहीं है। यह समझा जाना जरूरी है कि भारतीय समाज में बढ़ती असमानता को आंशिक रूप से दूर करने के लिए लोक कल्याणकारी खर्च निहायत आवश्यक है।

# मराठी जनता से फिर से जुड़ने उद्धव-आदित्य ने कसी कमर

– लेखा रत्तनाणी

**बीजेपी** ने शिवसेना को बांटकर तोड़ दिया है। इसके पीछे भाजपा की एक हमने तो तुमसे कहा था वाली कहानी है। उन्होंने बाल ठाकरे के बेटे उद्धव को सबक सिखाने की बात कही थी और उन्होंने अपना संकल्प पूरा भी किया। अपदस्थ मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे यह कहानी बता रहे हैं कि कैसे जब वे अस्पताल में सर्जरी के बाद आराम कर रहे थे तब जिस पर उन्होंने भरोसा किया था उन एकनाथ शिंदे ने उनकी पीठ में छुरा घोंप दिया।

महाराष्ट्र में शिवसेना के उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली सरकार को नाटकीय तख्तापलट और बढ़े पैमाने पर पलायन के बाद अपदस्थ किए जाने को अब एक महीने से अधिक का समय हो गया है। इस तख्तापलट में नौ मंत्री भी शामिल थे। शिवसेना में कुछ ऐसा हो रहा था जिसके बारे में न तो तत्कालीन मुख्यमंत्री को, न ही उनके राजनेता-बेटे आदित्य या मुखर पार्टी प्रवक्ता और राज्यसभा सांसद संजय राउत को कोई जानकारी थी। आंतरिक असंतोष को यदि देखा भी गया होगा तो भी उसे स्पष्ट रूप से अनदेखा और अनसुना किया गया था।

अब बागी एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना और भारतीय जनता पार्टी के पैबंद वाले नए गठबंधन को अलग किस्म के विवाद परेशान कर रहे हैं। भाजपा द्वारा निर्देशित और सहायता प्राप्त यह नया गठजोड़ आज असहज है। यह उन लोगों के दबावों से त्रस्त है जिन्होंने कई उम्मीदों और वादों के भरोसे पर पक्ष बदल दिया है, जिन्हें पूरा करना आसान नहीं होगा। इसका एक संकेत यह है कि नई सरकार के गठन के एक महीने बाद भी अभी तक मुख्यमंत्री शिंदे मंत्रिमंडल की घोषणा नहीं कर पाए हैं।

30 जून को जब शिंदे ने पदभार संभाला तभी से महाराष्ट्र को दो सदस्यीय माइक्रो कैबिनेट, सीएम के रूप में बागी शिवसैनिक एकनाथ शिंदे और उपमुख्यमंत्री के रूप में भाजपा के देवेंद्र फडणवीस द्वारा चलाया जा रहा है। यह नया शक्ति संयोजन दबावों को संतुलित करता है और तय करेगा कि तख्तापलट के पुरस्कारों को कैसे वितरित किया जाए। कुछ अन्य असुविधाजनक समायोजन भी हैं पर उनके लिए समय लग रहा है। उनमें से एक भाजपा के पास विधायकों

की सबसे बढ़ी संख्या का होना है। 288 सदस्यीय सदन में भाजपा के 106 सदस्य हैं। भाजपा जहां शिंदे को सहारा देना चाहती है वही उसका अंतिम लक्ष्य अपने लोगों और उनके सत्ता आधार का निर्माण करना है। इसलिए भाजपा को सत्ता में बढ़ी हिस्सेदारी की तलाश होगी। इसके अलावा शिंदे गुट का समर्थन करने वाले 29 निर्दलीय विधायकों को राजनीतिक पदों के साथ समायोजित करना असंभव नहीं तो मुश्किल जरूर होगा।

इसके केंद्र में नए मुख्यमंत्री की कमजोर राजनीतिक स्थिति है। उन्हें निश्चित रूप से भाजपा का पर्याप्त समर्थन है, लेकिन उनके पास अपने बारे में बताने के लिए ज्यादा कुछ नहीं है जिसे वे राज्य के लोगों को बता सकते हैं। अन्य सभी प्रमुख खिलाड़ियों के भी अपने हित हैं।

बीजेपी ने शिवसेना को बांटकर तोड़ दिया है। इसके पीछे भाजपा की एक हमने तो तुमसे कहा था वाली कहानी है। उन्होंने बाल ठाकरे के बेटे उद्धव को सबक सिखाने की बात कही थी और उन्होंने अपना संकल्प पूरा भी किया। अपदस्थ मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे यह कहानी बता रहे हैं कि कैसे जब वे अस्पताल में सर्जरी के बाद आराम कर रहे थे तब जिस पर उन्होंने भरोसा किया था उन एकनाथ शिंदे ने उनकी पीठ में छुरा घोंप दिया। उनका कहना है कि यह विद्रोह नहीं बल्कि विश्वासघात था जो सबसे खराब काम है। शिवसेना में आम तौर पर इस तरह की घटना नहीं होती। उद्धव ठाकरे के बेटे तथा पर्यावरण के मुद्दों पर अपना समर्थन देते हुए युवाओं और उदारवादियों का बहुत ध्यान आकर्षित करने वाले आदित्य ठाकरे के पास एक और कहानी है। उनकी कहानी नई पीढ़ी की गाथा है जो विनम्रता के साथ जनता के साथ जुड़ने और सीखने के लिए राज्य भर का दौरा कर रहे हैं। इस दौरे की प्रतिक्रियाएं जबरदस्त रही हैं- जिन्हें धोखा दिया गया उनका स्वागत करने के लिए लोग उमड़ रहे हैं। शिंदे एकमात्र व्यक्ति हैं जिसके पास अभी तक एक भी सशक्तकहानी नहीं है कि वह इस स्पष्ट आरोप से बच सकें कि उन्होंने भाजपा को अपना ईमान बेचकर मुख्यमंत्री की कुर्सी हासिल की है।

सत्ता की इस दबढ़ के विजेताओं के लिए बदतर तथ्य यह है कि भाजपा के स्थानीय नेता और पूर्व मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को भी, जिनका तख्तापलट करने में स्पष्ट हाथ था, अंतिम समय में उपमुख्यमंत्री के रूप में नई सरकार में शामिल होने के लिए कहा गया था। पहले फडणवीस ने मीडिया से कहा था कि वे सरकार से बाहर रहेंगे लेकिन बाद में शिंदे के डिप्टी के रूप में शामिल हो गए। वे पूर्व मुख्यमंत्री थे जिन्हें पदावनत कर उपमुख्यमंत्री बना दिया गया। पार्टी ने उन्हें ऐसा करने का निर्देश दिया। जो तस्वीर सामने आई उससे साफ नजर आ रहा था कि इस घटनाक्रम में नई दिल्ली शामिल थी जिसने महाराष्ट्र में नाच रही कठपुतलियों की डोर अपने हाथ में रखी थी।

सत्ता परिवर्तन की इस घटना ने उस विचार को एक नयी ऊर्जा दी है जिस विचार पर शिवसेना का गठन किया गया था और पहली बार में ही उसने जनता के दिमाग में घर कर लिया था और यहां तक कि इसे लागू करने के लिए अपनाए गए हिंसक तरीकों के कारण शिवसेना पुलिस की नजरों में चढ़ गयी थी। यह विचार था भूमि पुत्रों के अधिकारों की राजनीति का। शुरुआती दिनों में पार्टी ने महाराष्ट्रीय युवाओं को बैंकों, रेलवे, अन्य बढ़े सार्वजनिक उपक्रमों और निजी क्षेत्र की कंपनियों में नौकरियां दिलाने की मांग को लेकर आंदोलनों का नेतृत्व किया। पार्टी ने बैंक शाखाओं में, कभी-कभी मुंबई में पश्चिमी क्षेत्र के मुख्यालय में, रेलवे भर्ती बोर्डों और अन्य के कार्यालयों में अनगिनत स्थानीय उग्र आंदोलन किए। शिवसेना मराठी युवाओं की नौकरियों के लिए लड़ रही थी। दूसरी ओर, शिवसेना आम आदमी के लिए भी संघर्ष कर रही थी- पानी के कनेक्शन को फिर से शुरू करने के लिए लड़ना, सड़कों को ठीक करना, यहां तक कि जब अन्य लोग सामान्य वस्तुएं और सामान ऊंची कीमतों पर बेच रहे थे तब वे चीजें पार्टी ने कम कीमत पर जनता को उपलब्ध कराई थीं। इस वजह से भाजपा नेता प्रमोद महाजन यह कहने के लिए मजबूर हुए थे कि शिवसेना सही चीजें गलत तरीके से करती है।

# Bima Vihar
# A Premium Housing

## Live with the Nature

An upcoming Housing Society in Pure Environment.
***A Chance to Romance with Nature***

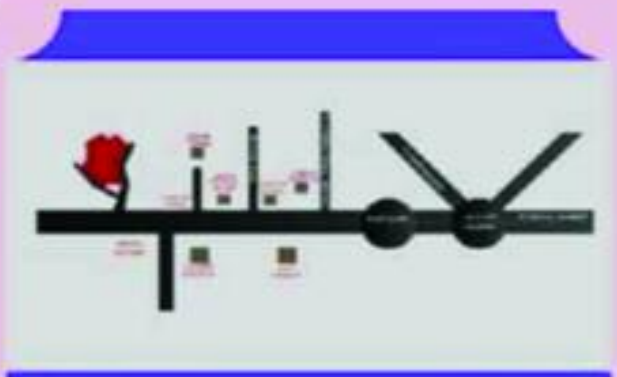

### Proposed Amenities

Secured Boundary wall
Solar Electrification
Rain Water Harvesting
Water Treatment Plant
Anti-termite Treatment
Power Back Up
Club House
Play Zone
Wi fi Zone
Jogging Park
and many more .....

Contact the Expert
Dhanesh Chaturvedi
Consultant

Mobile - 8269006100
Mail - lic_dhanesh@rediffmail.com
Visit our Facebook Page - www.facebook.com/BimaVihar

# प्रकृति रक्षति रक्षितः

**सलिल सरोज**
कार्यकारी अधिकारी लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली 9968638267

संस्कृत भाषा मे लिखित श्लोक 'धर्मो रक्षति रक्षितः' जिसका वर्णन महाभारत व मनुस्मृति में मिलता है का अर्थ है कि जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है और पूर्ण श्लोक 'धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः/तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोऽवधीत' का अर्थ है जो मनुष्य धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है। धर्म की रक्षा करने वाला मनुष्य कभी पराजित नहीं होता, क्योंकि उसकी रक्षा स्वयं धर्म (ईश्वर, मनुष्य, प्रकृति, ब्रह्माण्ड, इत्यादि) करता है। आज जब मानव प्राकृतिक असंतुलन की वजह से अनगिनत गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है तो ठीक इसी श्लोक की भाँति 'प्रकृति रक्षति रक्षितः ' मतलब जो प्रकृति की रक्षा करता है, प्रकृति भी उसी की रक्षा करती है, की महती आवश्यकता है। मानव जीवन की उत्पत्ति के साथ ही प्रकृति ने मनुष्य को उसकी जरूरत की हर चीड़ मुहैया कराई, लेकिन तदनुपरांत मनुष्य की जरूरतें ना खत्म होने वाली ख्वाहिशों और दिखावट में तब्दील होने लगी; मनुष्य और प्रकृति के बीच एक जंग छिड़ गई, जिसका कुपरिणाम दोनों को ही झेलना पड़ रहा है। प्रकृति अपने दर्द का निवारण खुद कर सकती है लेकिन उसकी समय अवधि ज्यादा होती है इसलिए हम मानव जाति से यह अपेक्षा की जाती है कि हम प्रकृति को मलहम लगाने में अपने स्वार्थ से उठकर मदद करें ताकि प्रकृति हमें हमारी जरूरत की चीजें - साफ हवा, पानी, अन्न आदि बिना किसी भेदभाव के प्रदान करती रहे।

दुनिया का हर धर्म शांति का पैरोकार है कम से कम तब जब प्रकृति संरक्षण की बात होती है। विश्व के सभी धर्मों में पर्यावरण को संरक्षित करने की बात कही गई है। प्रकृति के संरक्षण के लिये विभिन्न धार्मिक समूहों द्वारा वैश्विक या स्थानीय स्तर पर कई प्रयास किये जा रहे हैं। पाकिस्तान में स्थित कब्रगाहों में प्राचीन वृक्षों की प्रजातियाँ पाई जाती हैं क्योंकि इनको काटना गुनाह माना जाता है, लेबनान के मैरोनाईट चर्च ने हरीसा के जंगलों को पिछले 1,000 वर्षों से संरक्षित रखा है, थाईलैंड के बौद्ध भिक्षुओं ने संकटग्रस्त जंगलों की रक्षा हेतु वहाँ छोटे-छोटे विहारों की स्थापना की है तथा उसको पवित्र जंगल घोषित किया गया है।

इसके अलावा जर्मनी के 300 चर्चों ने स्थानीय समुदायों के सहयोग से सौर ऊर्जा प्रणाली अपनाई है तथा वृहत स्तर पर इसका लगातार प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। अमेरिका में रहने वाले अफ्रीकी मूल के लोगों द्वारा क्वान्फा त्योहार प्रकृति संरक्षण का एक उपयुक्त उदाहरण है। वर्ष 1986 में इटली के शहर असीसी में विश्व वन्यजीव कोष द्वारा 'असीसी घोषणा' का आयोजन किया गया। इसमें विश्व के पाँच प्रमुख धर्मों (ईसाई, हिंदू, इस्लाम, बौद्ध तथा यहूदी) के प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया गया था ताकि वे इस मुद्दे पर सुझाव प्रस्तुत कर सकें कि उनके धर्मों में प्रकृति संरक्षण हेतु क्या प्रावधान है तथा किस प्रकार वे योगदान कर सकते हैं। वैश्विक स्तर पर पर्यावरण संरक्षण हेतु विभिन्न धर्मों के सहयोग से अलायंस ऑफ रिलिजन एंड कंजर्वेशन नामक संगठन की स्थापना वर्ष 1995 में की गई थी। विश्व वन्यजीव कोष द्वारा तथा अलायंस ऑफ रिलिजन एंड कंजर्वेशन के सहयोग से 'लिविंग प्लैनेट कैंपेन' नामक एक मुहिम शुरू की गई। इसके तहत विश्व के प्रमुख धर्मों ने पर्यावरण संरक्षण हेतु कार्य करने की प्रतिबद्धता प्रदर्शित की तथा उनकी इस प्रतिबद्धता को 'जीवंत पृथ्वी के लिये पवित्र उपहार' का नाम दिया गया। इस अभियान के तहत वकालत, शिक्षा, स्वास्थ्य, भूमि, संपत्ति, जीवनशैली तथा मीडिया के क्षेत्र में पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहित करना शामिल है। इस प्रतिबद्धता के तहत जैन धर्म ने अंतर्राष्ट्रीय जैन व्यापार पुरस्कार प्रारंभ किया है। इसके तहत उन कंपनियों को पुरस्कृत किया जाता है जिन्होंने पर्यावरणीय प्रभावों को कम करते हुए प्रगति की है। इसी प्रकार स्वीडन के लूथरन चर्च के सहयोग से स्वीडन में नेशनल फॉरेस्ट स्टीवार्डशिप काउंसिल की स्थापना की गई।

भारतीय परिप्रेक्ष्य की बात करें तो लोक संस्कृति में मानव की भूमिका प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षक/प्रबंधक के रूप में मानी गई है। इसमें मानव के साहचर्य के हजारों सन्दर्भ हैं और पर्यावरण के साथ उत्तम सामंजस्य रखने की सीख दी गई है। पेड़ों की पूजा करने से लेकर धरती व नदियों को मां के पवित्र सम्बोधन से नवाजने का संस्कार भी है। हमारे लोकगीत, लोक नृत्य, लोक कथाएं, लोक त्योहार - ये सब प्रकृति-प्रेम को प्रकट करने वाले हैं। मनोरंजन, खेतों में बुवाई, धान की कटाई आदि अवसरों पर हमारे पुरखे मिल-जुलकर जल, पृथ्वी, वायु अग्नि और आकाश की महिमा का बखान करते थे। कृतज्ञता का भाव उनके रोम- रोम से प्रकट होता था। लोक कहावतों व लोक कथाओं पर नज़र डालें तो उनकी सीख में पर्यावरण के प्रति श्रद्धा का भाव झलकता है। रामायण, महाभारत, गीता, वायु-पुराण, स्कन्द पुराण, भविष्य पुराण, वराह पुराण, ब्रह्म पुराण, मार्कण्डेय पुराण, मत्स्य पुराण, गरुड़ पुराण, श्री विष्णु पुराण, भागवत पुराण, श्रीदेवी भागवत पुराण वेद, उपनिषद् तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थ, पेड़-पौधे, जीव-जन्तुओं पर दया करने की सीख देते हैं। मानसिक शान्ति, शारीरिक सुख, इन सबकी पूर्ति के साधन प्राकृतिक सम्पदा ही है। गेहूँ, जौ, तिल, चना, चन्दन, लाल पुष्प, केसर, खस, कमल, ताम्बूल, श्वेत पुष्प, बांस, मिट्टी, फल, तुलसी, हल्दी, पीत-पुष्प, शहद इलाइची, सौंफ, उड़द, काले-पुष्प, सरसों के फूल, मुलेठी देवदार, बिल्व वृक्ष की छाल, आम, पला, खैर, पीपल, गूलर, दूब, कुश आदि को संरक्षित रखने के उद्देश्य से इन्हें किसी दिन,त्योहार, देवी-देवताओं की

पूजा-अर्चना से जोड़ा गया है। औषधि के रूप में फलों तथा जड़ी-बूटियों की रक्षा करने की बात कही गयी है और इन्हें घरों के निकटस्थ लगाकर पर्यावरण को स्वच्छ रखने की सलाह दी गयी है, जैसे- अंगूर, केला, अनार, सेब, जामुन, प्याज, लहसुन, गाजर, मूली, नींबू, अदरक, आंवला, घीया, बादाम, आम, टमाटर, अखरोट, अजवाइन, अनानास, अश्वगंधा, गिलोय, तम्बाकू, तरबूज, तुलसी, दालचीनी, धनिया, पुदीना, संतरा, पान, पीपल, बबूल, ब्राह्मी बूटी, काली मिर्च, लाल मिर्च, लौंग, हरड़, बहेड़ा आदि अनेक बूटियों का प्रयोग करने से मनुष्य निरोग रह सकता है।

हमें प्रकृति संरक्षण सीखने के लिए किसी अन्य देश या तकनीक की आवश्यकता नहीं है। हमारे धर्म, शास्त्रों में यह बहुतायत में लिखा गया है और हमारे पूर्वजों ने प्रकृति संरक्षण के अनेकों बेहतरीन उपाय बताए हैं जिसकी लिए ज्यादा धन की भी आवश्यकता नहीं है। उन्होनें इसे हमारी आदत में शामिल कर के एक रोजमर्रा की चीज की तरह पेश किया था ना कि आज की तरह किसी ड़ास दिन पर वृक्षारोपण कार्यक्रम की तरह। संरक्षण में सिर्फ पेड़ लगाना ही नहीं बल्कि उनकी जान बचाना भी शामिल है और यह किस तरह किया जा सकता है, यह हमें विरासत में मिली है जिसे हमें पुनर्जीवित करने की और उन्हें संभालने की खास जरूरत है। हमारे ऋषि जानते थे कि पृथ्वी का आधार जल और जंगल है. इसलिए उन्होंने पृथ्वी की रक्षा के लिए वृक्ष और जल को महत्वपूर्ण मानते हुए कहा है- वृक्षात् वर्षति पर्जन्यः पर्जन्यादन्न सम्भवः अर्थात् वृक्ष जल है, जल अन्न है, अन्न जीवन है। जंगल को हमारे ऋषि आनंददायक कहते हैं- अरण्यं ते पृथिवी स्योनमस्तु यही कारण है कि हिन्दू जीवन के चार महत्वपूर्ण आश्रमों में से ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास का सीधा संबंध वनों से ही है। हम कह सकते हैं कि इन्हीं वनों में हमारी सांस्कृतिक विरासत का संवर्धन हुआ है। हिन्दू संस्कृति में वृक्ष को देवता मानकर पूजा करने का विधान है। वृक्षों की पूजा करने के विधान के कारण हिन्दू स्वभाव से वृक्षों का संरक्षक हो जाता है। सम्राट विक्रमादित्य और अशोक के शासनकाल में वन की रक्षा सर्वोपरि थी। वैदिक काल में जीवित वृक्षों को काटना प्रतिबंधित था और ऐसे कृत्यों के लिए दंड निर्धारित किया गया था। उदाहरण के लिए, याज्ञल 6ए, स्मृति, ने पेड़ों और जंगलों को काटने को दंडनीय अपराध घोषित किया है और 20 से 10-रानी का दंड भी निर्धारित किया है। चाणक्य ने भी आदर्श शासन व्यवस्था में अनिवार्य रूप से अरण्यपालों की नियुक्ति करने की बात कही है। पर्यावरण संरक्षण के कानून की दृष्टि से मुगल सम्राटों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है उनके महलों के चारों ओर फलों के बागों और हरे भरे पार्कों की स्थापना, केंद्रीय और प्रांतीय मुख्यालय, सार्वजनिक स्थान, नदियों के किनारे और घाटी में वे गर्मी के मौसम के स्थानों या अस्थायी मुख्यालय के रूप में इस्तेमाल करते थे।

हमारे महर्षि यह भली प्रकार जानते थे कि पेड़ों में भी चेतना होती है, इसलिए उन्हें मनुष्य के समतुल्य माना गया है। ऋग्वेद से लेकर बृहदारण्यकोपनिषद्, पद्मपुराण और मनुस्मृति सहित अन्य वाङ्मयों में इसके संदर्भ मिलते हैं. छान्दोग्य उपनिषद में उद्दालक ऋषि अपने पुत्र श्वेतकेतु से आत्मा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि वृक्ष जीवात्मा से ओतप्रोत होते हैं और मनुष्यों की भाँति सुख-दुःख की अनुभूति करते हैं। हिन्दू दर्शन में एक वृक्ष की मनुष्य के दस पुत्रों से तुलना की गई है- दशकूप समावापीः दशवापी समोह्रदः/दशह्रद समःपुत्रो दशपत्र समोद्रुमः। इसी संस्कृति में हर भारतीय घर में तुलसी का पौधा कहीं न कहीं मिल ही जाता है। तुलसी का पौधा मनुष्य को सबसे अधिक प्राणवायु ऑक्सीजन देता है। तुलसी के पौधे में अनेक औषधीय गुण भी मौजूद हैं पीपल को देवता मानकर भी उसकी पूजा नियमित इसलिए की जाती है क्योंकि वह भी अधिक मात्रा में ऑक्सीजन देता है। देवों के देव महादेव तो बिल्व-पत्र और धतूरे से ही प्रसन्न होते हैं। यदि कोई शिवभक्त है तो उसे बिल्वपत्र और धतूरे के पेड़-पौधों की रक्षा करनी ही पड़ेगी। वट पूर्णिमा और आंवला ग्यारस का पर्व मनाना है तो वट वृक्ष और आंवले के पेड़ धरती पर बचाने ही होंगे। हिन्दुओं के चार वेदों में से एक अथर्ववेद में बताया गया है कि आवास के समीप शुद्ध जलयुक्त जलाशय होना चाहिए। जल दीर्घायु प्रदायक, कल्याणकारक, सुखमय और प्राणरक्षण होता है। शुद्ध जल के बिना जीवन संभव नहीं है। यही कारण है कि जल स्त्रोतों को बचाए रखने के लिए हमारे ऋषियों ने इन्हें सम्मान दिया। पूर्वजों ने कल-कल प्रवाहमान सरिता गंगा को ही नहीं वरन सभी जीवनदायिनी नदियों को मां कहा है। हिन्दू धर्म में अनेक अवसर पर नदियों, तालाबों और सागरों की मां के रूप में उपासना की जाती है। छान्दोग्योपनिषद् में अन्न की अपेक्षा जल को उत्कृष्ट कहा गया है। महर्षि नारद ने भी कहा है कि पृथ्वी भी मूर्तिमान जल है। अंतरिक्ष, पर्वत, पशु-पक्षी, देव-मनुष्य, वनस्पति सभी मूर्तिमान जल ही हैं। जल ही ब्रह्मा है। महान ज्ञानी ऋषियों ने धार्मिक परंपराओं से जोड़कर पर्वतों की भी महत्ता स्थापित की है। पर्वत, देश के प्रमुख पर्वत देवताओं के निवास स्थान हैं और अगर पर्वत देवताओं के वास स्थान नहीं होते तो कब के खनन माफिया उन्हें उखाड़ चुके होते। विंध्यगिरी महाशक्तियों का वास स्थल है, कैलाश महादेव की तपोभूमि है। हिमालय को तो भारत का किरीट कहा गया है। महाकवि कालिदास ने कुमारसम्भवम् में हिमालय की महानता और देवत्व को बताते हुए कहा है- अस्तुस्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः भगवान श्रीकृष्ण ने गोवर्धन की पूजा का विधान इसलिए शुरू कराया था क्योंकि गोवर्धन पर्वत पर अनेक औषधि के पेड़-पौधे थे, मथुरा के गोपालकों के गोधन के भोजन-पानी का इंतजाम उसी पर्वत पर था। मथुरा-वृन्दावन सहित पूरे देश में दीपावली के बाद गोवर्धन पूजा धूमधाम से की जाती है। इसी तरह हमारे महर्षियों ने जीव-जन्तुओं के महत्व को पहचान कर उनकी भी देवरूप में अर्चना की है। मनुष्य और पशु परस्पर एक-दूसरे पर निर्भर हैं। हिन्दू धर्म में गाय, कुत्ता, बिल्ली, चूहा, हाथी, शेर और यहां तक की विषधर नागराज को भी पूजनीय बताया है। प्रत्येक हिन्दू परिवार में पहली रोटी गाय के लिए और आखिरी रोटी कुत्ते के लिए निकाली जाती है। चींटियों को भी बहुत से हिन्दू आटा डालते हैं। चिडिों और कौओं के लिए घर की मुंडेर पर दाना-पानी रखा जाता है। पितृपक्ष में तो काक को बाकायदा निमंत्रित करके दाना-पानी खिलाया जाता है। इन सब परंपराओं के पीछे जीव संरक्षण का संदेश है। हिन्दू गाय को मां कहता है, उसकी अर्चना करता है। नागपंचमी के दिन नागदेव की पूजा की जाती है। नाग-विष से मनुष्य के लिए प्राण रक्षक औषधियों का निर्माण होता है। नाग पूजन के पीछे का रहस्य ही यह है। हिन्दू धर्म का वैशिष्ट्य है कि वह प्रकृति के संरक्षण की परम्परा का जन्मदाता है। हिन्दू संस्कृति में प्रत्येक जीव के कल्याण का भाव है। हिन्दू धर्म के जितने भी त्योहार हैं, वे सब प्रकृति के अनुरूप हैं। मकर संक्रान्ति, वसंत पंचमी, महाशिवरात्रि, होली, नवरात्र, गुड़ी पड़वा, वट पूर्णिमा, ओणम, दीपावली, कार्तिक पूर्णिमा, छठ पूजा, शरद पूर्णिमा, अन्नकूट, देव प्रबोधिनी एकादशी, हरियाली तीज, गंगा दशहरा आदि सब पर्वों में प्रकृति संरक्षण का पुण्य स्मरण है।

**प्रकृति का उपहार हमें अपनी आगे वाली पीड़ी से गिरवी के रूप में मिली है जिसकी जान बचने की जिम्मेदारी हम पर है। महात्मा गाँधी कहते थे - प्रकृति के पास हमारी जरूरतों के लिए पर्याप्त संसाधन है लेकिन लोभ के लिए पूरी पृथ्वी अलबत्ता पूरा ब्रह्माण्ड भी कम है। अपनी जरूरतों को अगर सीमित नहीं कर सकते तो जरूरतों को लालच में तब्दील ना करने की कोशिश जरूर करनी चाहिए।**

प्रकृति का उपहार हमें अपनी आगे वाली पीड़ी से गिरवी के रूप में मिली है जिसकी जान बचने की जिम्मेदारी हम पर है। महात्मा गाँधी कहते थे - प्रकृति के पास हमारी जरूरतों के लिए पर्याप्त संसाधन है लेकिन लोभ के लिए पूरी पृथ्वी अलबत्ता पूरा ब्रह्माण्ड भी कम है। अपनी जरूरतों को अगर सीमित नहीं कर सकते तो जरूरतों को लालच में तब्दील ना करने की कोशिश जरूर करनी चाहिए। मार्टिन लूथर किंग ने कहा है - किसी एक के ऊपर अन्याय सबके ऊपर अन्याय है। यदि प्रकृति के साथ आज आप अपने आस पास न्याय नहीं कर रहे हैं तो इसके दूरगामी परिणाम आपके विश्व के किसी कोने में किसी न किसी रूप में देखने को मिलेंगे। पृथ्वी पर एक स्वस्थ जीवन की परिकल्पना मनुष्य और प्रकृति के साहचर्य के बिना करना असंभव है। हम सब को चेतने की सख्त जरूरत है और यदि अब भी देर की तो यह आखिरी देर होगी।

# 75 वर्षों का हमारा सफर

**डॉ. ऋचा सिंह राठौर**
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर एवं प्रभारी, रक्षा अध्ययन विभाग, गांधी महाविद्यालय, उरई

आजाद भारत के 75 वर्षों के सफर को सिर्फ शब्दों में बाँध पाना सरल नहीं है. भारत की उपलब्धियाँ बेहद गौरवान्वित करने वाली और तमाम विश्व समुदाय, विशेष रूप से तृतीय विश्व के देशों के लिए प्रेरणादायी हैं. उपनिवेशवाद की एक लंबी शोषणकारी दासता से जब हम 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हुये, तब हमारी आँखों में सिर्फ एक स्वप्न था, भारत को एक राष्ट्र के रूप स्थापित करने का. स्वतंत्रता अपने साथ विभाजन के गहरे जख्म, एक त्रासदी लाई थी; समाज अविश्वास, संदेह से भर चुका था. गरीबी, आर्थिक पिछड़ापन, खाद्यान्न संकट तो हमारी समस्याएं थी ही, हम राजनीतिक रूप से भी अपरिपक्व थे. शक्ति के बल पर निर्धारित होता वैश्विक पर्यावरण भी तत्कालीन शक्तिहीन भारत के अनुकूल नहीं था. हमें अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए, जीवित रहने के लिए विश्व के देशों से मदद भी चाहिए थी और हम अपनी स्वतंत्रता भी नहीं खोना चाहते थे. हमें बुद्धिमानी के साथ संस्थागत और ढाँचागत विकास के मार्ग पर आगे बढ़ना था; न्यायपालिका, कार्यपालिका, विधायिका और लोकतंत्र की ऐसी मजबूत नींव रखनी थी जिस पर भारत की बुलंद इमारत खड़ी की जा सके.

पंडित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में नए आजाद भारत के सपनों की पहली सरकार ने कार्यभार सँभाला. विभाजन की समस्याओं, रियासतों के भारतीय संघ में विलीन होने की समस्याओं से नई सरकार निपट ही रही थी कि कश्मीर पर अधिकार जमाने की नीयत से पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर दिया. तमाम तकनीकी विवशताओं के कारण सही समय पर प्रतिउत्तर नहीं दिया जा सका, परिणामस्वरूप कश्मीर का 13000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पाकिस्तान के अवैध कब्जे में चला गया, जिसकी परिणति आज भी हम गुलाम कश्मीर के रूप में देखते हैं. कालांतर में ये स्थितियाँ केन्द्र सरकारों की राजनीतिक अदूरदर्शिता के कारण और भी जटिल हो गयीं. दो देशों का मामला अनावश्यक रूप से सयुंक्त राष्ट्र पहुँच गया और आज तक ना सुलझ सका.

अर्थव्यवस्था के मोर्चे पर भी हमारी समस्याओं का कोई अंत नहीं था. आमदनी का सबसे बढ़ा स्रोत कृषि क्षेत्र था जो बदहाल था. पुरानी कृषि प्रविधियों, मानसून पर निर्भरता, जोत की समस्या, किसान की ऋणग्रस्तता आदि वे समस्याएं थीं जिनका समाधान खोजे बगैर एक पग भी आगे नहीं बढ़ा जा सकता था. भारत ने

**हमने शक्तिहीन से शक्तिशाली बनने में लंबा सफर तय किया. हम एक दृख लोकतंत्र हैं. हमने कोविड काल में अपनी सामर्थ्य का प्रदर्शन किया है. इतनी विशाल आबादी का मुफ्त टीकाकरण कर हमने ये दिखा दिया कि हम संकट में भी दृड़ता से खड़े रह सकते हैं.**

अपनी औद्योगिक नीति के तहत, जिसे बॉम्बे योजना के नाम से भी जाना जाता है, के द्वारा एक मिश्रित अर्थव्यवस्था की परिकल्पना की तथा राज्य और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम स्थापित किये गए. पंचवर्षीय योजनाओं की शुरुआत हुई. साठ के दशक में हरित क्रांति के साथ भारत ने खाद्यान्न उत्पादन में एक बडी छलांग मारी. यह दशक चीन के साथ युद्ध और उसमे हमारी पराजय का भी दशक है लेकिन 1962 के युद्ध में हमारी हार ने हमें शक्ति का महत्व समझाया. एक बार धोखा खाने के बाद राजनैतिक आदर्शवाद को यथार्थवाद पर तौला जाने लगा. इसी कालखंड में एक तरफ देश ने मैत्री-धोखे के घाव सहे, हार का दंश भोग तो इसी कालखंड में इसरो (1969) की स्थापना करके देश ने अपनी जीवटता, जिजीविषा को सम्पूर्ण विश्व के सामने प्रदर्शित किया. इससे पूर्व भामा एटॉमिक रिसर्च सेंटर(1954) की स्थापना भी देश की महत्वपूर्ण उपलब्धि रही.

भारत अपनी गुटनिरपेक्षता की नीति के कारण गुटों के संघर्ष से स्वयं को बचाने में सफल रहा किंतु हमारी अपनी सुरक्षा चिंताएँ गंभीर थी. पाकिस्तान के सीटो, सेंटो जैसे पैक्ट में शामिल हो जाने से शीत युद्ध हमारे दरवाजे तक आ चुका था. 1970 आते-आते भारत अपनी क्षेत्रीय आकांक्षाओं को पूरा करने में सक्षम हो रहा था. 1971 के भारत पाक युद्ध में हमने शानदार विजय हासिल की और पाकिस्तान का विभाजन कर एक नये देश बांग्लादेश को बनाया. देश पर जबरन थोपे गए युद्ध और उसके परिणाम ने यह साबित किया कि हमारी सेनाएँ दक्षिण एशिया में भारतीय हितों की रक्षा करने में समर्थ हैं. इसके बाद 18 मई 1974 को भारत ने पोखरण में परमाणु विस्फोट कर दुनिया को यह दिखा दिया कि हम किसी से कम नहीं.

आजादी की 75 वर्षीय इस यात्रा में 1990 का दशक भी बेहद महत्वपूर्ण है. इस दशक में हमने तमाम घरेलू विरोधों के बाद भी उदारीकरण और वैश्वीकरण की ओर कदम बढ़ाए, निजीकरण और निवेश की राह चुनी. सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों का विनिवेश आरम्भ कर ढाँचागत विकास के लिए धन एकत्र किया, जिससे निवेश को आकर्षित किया जा सके. सब्सिडी पर नियंत्रण और खर्च में कमी के प्रयास किये गए जिससे अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाया जा सके. इन प्रयासों के सुखद परिणाम हमें आज देखने को मिल रहे हैं. आज देश की जीडीपी 3.12 ट्रिलियन यूएस डॉलर के बराबर है तथा इसके सन 2040 तक 20 ट्रिलियन यूएस डॉलर हो जाने की आशा है. वर्ष 2050 तक चीन के बाद हम दूसरी सबसे बढ़ी अर्थव्यवस्था होंगे.

पिछली यात्रा के साथ मात्र इतना ही नहीं जुड़ा है, बल्कि पिछले 75 वर्षों में हमने बेहद शानदार उपलब्धियाँ हासिल की हैं. शिक्षा, ज्ञान, विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा, व्यापार, खेल, सेना, राजनीति, विदेश नीति, सहित कोई भी क्षेत्र क्यों न रहा हो हमने अनेकानेक उपलब्धियाँ हासिल की हैं. चंद्रयान, मंगलयान की सफलता, अमेरिका से परमाणु समझौता, राकेट और मिसाइल में हमारी क्षमताएँ, बेखौफ सर्जिकल स्ट्राइक्स, कश्मीर से धारा 370 का हटाया जाना, रूस और अमेरिका दोनों से अपनी शर्तों पर व्यापार करना हमारी बढ़ती हुई शक्ति और राजनीतिक साहस का प्रतीक है.

हमने शक्तिहीन से शक्तिशाली बनने में लंबा सफर तय किया. हम एक दृढ़ लोकतंत्र हैं. हमने कोविड काल में अपनी सामर्थ्य का प्रदर्शन किया है. इतनी विशाल आबादी का मुफ्त टीकाकरण कर हमने ये दिखा दिया कि हम संकट में भी दृढ़ता से खड़े रह सकते हैं. विकास दर के 3 प्रतिशत तक आ जाने के बाद भी हम वापस 8 प्रतिशत की स्थिति को प्राप्त कर चुके हैं, यह हमारी दृढ़ता का प्रतीक है. निःसंदेह हमने बहुत कुछ अर्जित किया है किंतु अब भी हमें मानव विकास सूचकांक, पर्यावरण, न्यायिक सुधारों, राजनीतिक सुधारों, वैश्विक नेतृत्व, वृहत्तर भूमिकाओं, संघीय ढाँचे, सम्प्रदायवाद, राजनीतिक शुचिता जैसे मुद्दों पर बहुत कार्य करना है. इन पर सकारात्मक कार्य करना अपेक्षित है ताकि हम अपने सपनों के भारत का निर्माण कर सकें.

# जन्माष्टमी पर घर में ऐसे सजाएं कान्हा जी की झांकी, दूर होगा वास्तु दोष आएगी सुख -समृद्धि

देश में जन्माष्टमी के महोत्सव की तैयारी बड़े धूम-धाम से चल रही है. लोग अपने घरों में कान्हा जी की झांकी सजाना शुरू कर दिए होंगे. पंचाग के अनुसार इस बार जन्माष्टमी तिथि दो दिन है. ऐसे में जन्माष्टमी का त्योहार कुछ लोग 18 अगस्त को मनायेगे और कुछ लोग 19 अगस्त को. मथुरा में जन्माष्टमी का त्योहार 19 अगस्त को मनाया जाएगा.

## घरों में सजायें कान्हा जी की झांकी, दूर होगा घर का वास्तु दोष

जन्माष्टमी के दिन लोग अपने घरों में कान्हा जी की झांकी बनाते हैं. झांकी में भगवान कृष्ण की बाल रूप की प्रतिमा या चित्र रखते है. उन्हें उनकी सबसे प्रिय चीज बांसुरी अर्पित करते हैं. पूरे दिन व्रत रखकर मध्य रात्रि को उनकी पूजा करते हैं. पूजा करने के बाद सभी को प्रसाद वितरण करते हैं. मान्यता है कि कान्हा जी की बांसुरी को घर में रखने से सुख-समृद्धि में बढ़ोत्तरी होती है. कान्हा जी की झांकी घर में बनाने से परिवार से रुठी खुशहाली पुनः वापस आ जाती है. वास्तु शास्त्र के अनुसार बासुंरी को घर में रखने से न केवल शुभता और शांति आती है बल्कि घर का सारा वास्तु दोष भी समाप्त हो जाता है. मान्यता है कि जन्माष्टमी व्रत रखने और कान्हा जी पूजा करने से संतान की चाह रखने वालों को संतान सुख की प्राप्ति होती है.

घर में ईशान कोण पर कान्हा जी की झांकी बनाने से घर की नकारात्मकता दूर हो जाती है. घर परिवार में खुशहाली फैलती है तथा शांति बनी रहती है.

यदि वास्तु दोष के चलते घर में कई परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है तो जन्माष्टमी के दिन घर में कान्हा जी की झांकी बनाएं तथा कान्हा जी को बांसुरी अर्पित करें. दूसरे दिन इस बांसुरी को घर की पूर्व दीवार पर तिरछी लगा दें. वास्तुशास्त्र की मान्यता है कि ऐसा करने से घर का वास्तु दोष खत्म हो जाता है.

# तीर्थों का तीर्थ अमरनाथ

यहाँ की प्रमुख विशेषता पवित्र गुफा में बर्फ से प्राकृतिक शिवलिंग का निर्मित होना है। प्राकृतिक हिम से निर्मित होने के कारण इसे स्वयंभू हिमानी शिवलिंग भी कहते हैं। आषाड़ पूर्णिमा से शुरू होकर रक्षाबंधन तक पूरे सावन महीने में होने वाले पवित्र हिमलिंग दर्शन के लिए लाखो लोग यहां आते है। गुफा की परिधि लगभग डेड़ सौ फुट है और इसमें ऊपर से बर्फ के पानी की बूँदें जगह-जगह टपकती रहती हैं। यहीं पर एक ऐसी जगह है, जिसमें टपकने वाली हिम बूँदों से लगभग दस फुट लंबा शिवलिंग बनता है। चन्द्रमा के घटने-बढ़ने के साथ-साथ इस बर्फ का आकार भी घटता-बढ़ता रहता है। श्रावण पूर्णिमा को यह अपने पूरे आकार में आ जाता है और अमावस्या तक धीरे-धीरे छोटा होता जाता है। आश्चर्य की बात यही है कि यह शिवलिंग ठोस बर्फ का बना होता है, जबकि गुफा में आमतौर पर कच्ची बर्फ ही होती है जो हाथ में लेते ही भुरभुरा जाए। मूल अमरनाथ शिवलिंग से कई फुट दूर गणेश, भैरव और पार्वती के वैसे ही अलग अलग हिमखंड हैं।

## प्राकृतिक शिवलिंग

जनश्रुति प्रचलित है कि इसी गुफा में माता पार्वती को भगवान शिव ने अमरकथा सुनाई थी, जिसे सुनकर सद्योजात शुक-शिशु शुकदेव ऋषि के रूप में अमर हो गये थे। गुफा में आज भी श्रद्धालुओं को कबूतरों का एक जोड़ा दिखाई दे जाता है, जिन्हें श्रद्धालु अमर पक्षी बताते हैं। वे भी अमरकथा सुनकर अमर हुए हैं। ऐसी मान्यता भी है कि जिन श्रद्धालुओं को कबूतरों को जोड़ा दिखाई देता है, उन्हें शिव पार्वती अपने प्रत्यक्ष दर्शनों से निहाल करके उस प्राणी को मुक्ति प्रदान करते हैं। यह भी माना जाता है कि भगवान शिव ने अर्द्धागिनी पार्वती को इस गुफा में एक ऐसी कथा सुनाई थी, जिसमें अमरनाथ की यात्रा और उसके मार्ग में आने वाले अनेक स्थलों का वर्णन था। यह कथा कालांतर में अमरकथा नाम से विख्यात हुई।

कुछ विद्वानों का मत है कि भगवान शंकर जब पार्वती को अमर कथा सुनाने ले जा रहे थे, तो उन्होंने छोटे-छोटे अनंत नागों को अनंतनाग में छोड़ा, माथे के चंदन को चंदनबाड़ी में उतारा, अन्य पिस्सुओं को पिस्सू टॉप पर और गले के शेषनाग को शेषनाग नामक स्थल पर छोड़ा था। ये तमाम स्थल अब भी अमरनाथ यात्रा में आते हैं। अमरनाथ गुफा का सबसे पहले पता सोलहवीं शताब्दी के पूर्वाध में एक मुसलमान गडरिए को चला था। आज भी चौथाई चढ़ावा उस मुसलमान गडरिए के वंशजों को मिलता है। आश्चर्य की बात यह है कि अमरनाथ गुफा एक नहीं है। अमरावती नदी के पथ पर आगे बढ़ते समय और भी कई छोटी-बढ़ी गुफाएं दिखती हैं। वे सभी बर्फ से ढकी हैं।

## अमरनाथ यात्रा

अमर नाथ यात्रा पर जाने के भी दो रास्ते हैं। एक पहलगाम होकर और दूसरा सोनमर्ग बलटाल से। यानी कि पहलमान और बलटाल तक किसी भी सवारी से पहुँचें, यहाँ से आगे जाने के लिए अपने पैरों का ही इस्तेमाल करना होगा। अशक्त या वृद्धों के लिए सवारियों का प्रबंध किया जा सकता है। पहलगाम से जानेवाले रास्ते को सरल और सुविधाजनक समझा जाता है। बलटाल से अमरनाथ गुफा की दूरी केवल 14 किलोमीटर है और यह बहुत ही दुर्गम रास्ता है और सुरक्षा की दृष्टि से भी संदिग्ध है। इसीलिए सरकार इस मार्ग को सुरक्षित नहीं मानती और अधिकतर यात्रियों को पहलगाम के रास्ते अमरनाथ जाने के लिए प्रेरित करती है। लेकिन रोमांच और जोखिम लेने का शौक रखने वाले लोग इस मार्ग से यात्रा करना पसंद करते हैं। इस मार्ग से जाने वाले लोग अपने जोखिम पर यात्रा करते है। रास्ते में किसी अनहोनी के लिए भारत सरकार जिम्मेदारी नहीं लेती है।

## पहलगाम से अमरनाथ

पहलगाम जम्मू से 315 किलोमीटर की दूरी पर है। यह विख्यात पर्यटन स्थल भी है और यहाँ का नैसर्गिक सौंदर्य देखते ही बनता है। पहलगाम तक जाने के लिए जम्मू-कश्मीर पर्यटन केंद्र से सरकारी बस उपलब्ध रहती है। पहलगाम में गैर सरकारी संस्थाओं की ओर से लंगर की व्यवस्था की जाती है। तीर्थयात्रियों की पैदल यात्रा यहीं से आरंभ होती है। पहलगाम के बाद पहला पड़ाव चंदनबाड़ी है, जो पहलगाम से आठ किलोमीटर की दूरी पर है। पहली रात तीर्थयात्री यहीं बिताते हैं। यहाँ रात्रि निवास के लिए कैंप लगाए जाते हैं। इसके ठीक दूसरे दिन पिस्सु घाटी की चड़ाई शुरू होती है। कहा जाता है कि पिस्सु घाटी पर देवताओं और राक्षसों के बीच घमासान लड़ाई हुई जिसमें राक्षसों की हार हुई। लिद्दर नदी के किनारे-किनारे पहले चरण की यह यात्रा ज्यादा कठिन नहीं है। चंदनबाड़ी से आगे इसी नदी पर बर्फ का यह पुल सलामत रहता है।

## शेषनाग झील

चंदनबाड़ी से 14 किलोमीटर दूर शेषनाग में अगला पड़ाव है। यह मार्ग खड़ी चढ़ाई वाला और खतरनाक है। यहीं पर पिस्सू घाटी के दर्शन होते हैं। अमरनाथ यात्रा में पिस्सू घाटी काफी जोखिम भरा स्थल है। पिस्सू घाटी समुद्रतल से 11,120 फुट की ऊँचाई पर है। यात्री शेषनाग पहुँच कर ताजादम होते हैं। यहाँ पर्वतमालाओं के बीच नीले पानी की खूबसूरत झील है। इस झील में झांककर यह भ्रम हो उठता है कि कहीं आसमान तो इस झील में नहीं उतर आया। यह झील करीब डेड़ किलोमीटर लम्बाई में फैली है। किंवदंतियों के मुताबिक शेषनाग झील में शेषनाग का वास है और चौबीस घंटों के अंदर शेषनाग एक बार झील के बाहर दर्शन देते हैं, लेकिन यह दर्शन खुशनसीबों को ही नसीब होते हैं। तीर्थयात्री यहाँ रात्रि विश्राम करते हैं और यहीं से तीसरे दिन की यात्रा शुरू करते हैं। शेषनाग से पंचतरणी आठ मील के फासले पर है। मार्ग में बैवबैल टॉप और महागुणास दर्रे को पार करना पड़ता हैं, जिनकी समुद्रतल से ऊँचाई क्रमशः 13,500 फुट व 14,500 फुट है। महागुणास चोटी से पंचतरणी तक का सारा रास्ता उतराई का है। यहाँ पांच छोटी-छोटी सरिताएँ बहने के कारण ही इस स्थल का नाम पंचतरणी पड़ा है। यह स्थान चारों तरफ से पहाड़ों की ऊंची-ऊंची चोटियों से ढका है। ऊँचाई की वजह से ठंड भी ज्यादा होती है। ऑक्सीजन की कमी की वजह से तीर्थयात्रियों को यहाँ सुरक्षा के इंतजाम करने पड़ते हैं।

# यूटरस ट्रांसप्लांट हो सकता है बांझपन का इलाज: शोध

अमेरिका में 2016 से 2021 के बीच 33 महिलाओं को यूटरस ट्रांसप्लांट से गुजरना पड़ा. इनमें से 19 यानी लगभग 58 प्रतिशत ने कुल मिलाकर 21 बच्चों को जन्म दिया. जामा सर्जरी में छपी एक शोध रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है. शोधकर्ताओं ने लिखा है, 'अमेरिका में यूटरस ट्रांसप्लांट को एक क्लीनिकल वास्तविकता समझा जाना चाहिए.'

जिन महिलाओं का यूटरस ट्रांसप्लांट किया गया वे कथित यूट्रिन-फैक्टर की वजह से गर्भधारण नहीं कर पा रही थीं. यानी वे या उनका यूटरस जन्म से ही नहीं था या फिर उसे किसी वजह से निकाल दिया गया था.

इस शोध को यूट्रिन-फैक्टर से पीड़ित महिलाओं के लिए बड़ी उम्मीद के रूप में देखा जा रहा है. डैलस स्थित बेलर यूनिवर्सिटी मेडिकल सेंटर की डॉ. लीजा जोहैन्सन कहती हैं कि अमेरिका में दस लाख से ज्यादा महिलाओं को यूटरस ट्रांसप्लांट का लाभ मिल सकता है. जितनी महिलाओं को नया यूटरस लगाया गया, उनमें से 74 प्रतिशत के लिए यह ट्रांसप्लांट के एक साल से ज्यादा समय तक काम कर रहा था. इनमें से 83 प्रतिशत ने बच्चों को जन्म दिया. सभी बच्चों का जन्म सिजेरियन सेक्शन के जरिए हुआ. बच्चों के जन्म की

औसत अवधि ट्रांसप्लांट के 14 महीने बाद थी. बच्चों से में आधे से ज्यादा का जन्म 36 महीने के गर्भ के बाद हुआ.

बच्चों के जन्म के बाद नए यूटरस को निकाल दिया जाता है ताकि इम्यूनोसप्रेसिव दवा का इस्तेमाल पूरी उम्र ना करना पड़े. अमेरिका में ये ऑपरेशन बेलर यूनिवर्सिटी मेडिकल सेंटर, क्लीवलैंड क्लीनिक और पेन्सिल्वेनिया यूनिवर्सिटी हॉस्पिटल में किए गए. अब तक पूरी दुनिया में यूटरस ट्रांसप्लांट के सौ से ज्यादा ऑपरेशन किये जा चुके हैं. लेकिन बहुत सी महिलाओं के लिए इस ऑपरेशन का खर्च एक बड़ी बाधा हो सकता है. डॉ. जोहैन्सन कहती हैं, 'यूटरस ट्रांसप्लांट को बांझपन के इलाज में इंश्योरेंस के तहत कवर करना मूल बहस का हिस्सा है.'

बेलर सेंटर की डॉ. जूलियानो टेस्टा इस शोध की सह लेखक हैं. वह कहती हैं, 'यूटरस ट्रांसप्लाट बांझपन का एक प्रभावशाली इलाज है.' अमेरिका में हुए कुल ऑपरेशनों में से दो तिहाई अंगदान के कारण संभव हो पाए. हालांकि कम से कम एक चौथाई मरीजों को सर्जरी के बाद मुश्किलें हुईं. नैशविल की वैंडरबिल्ट यूनिवर्सिटी ने इस शोध पर टिप्पणी करते हुए लिखा है, 'अगर मृत दानदाताओं की संख्या काफी नहीं है तो जीवित दानदाताओं के लिए खतरा कम करना मकसद होना चाहिए.'

# किडनी रोगों से लड़ती है आयुर्वेदिक दवा

जलोदर से पीड़ित मरीज का इलाज आयुर्वेदिक पॉली-हर्बल दवा द्वारा किया जा सकता है, जिसमें न केवल क्रोनिक किडनी बीमारी को रोकने की क्षमता है, बल्कि महत्वपूर्ण अंग की सामान्य स्थिति को बहाल करने की भी ताकत है। यह दावा शोधकर्ताओं की एक टीम ने किया है। बता दें, अधिक वजन वाले लोगों के पेट में तरल पदार्थ जमा होने लगता है, जो अत्यधिक दर्द और गैस का कारण बनता है। इसे जलोदर कहते हैं। जर्नल ऑफ आयुर्वेद एंड इंटीग्रेटेड मेडिकल साइंसेज के एक अध्ययन में, कर्नाटक के मैसूरू स्थित जेएसएस आयुर्वेद मेडिकल कालेज एंड हास्पिटल के सहायक प्रोफेसर कोमला ए, सिद्धेश अराध्यमठ और शोधकर्ता मल्लीनाथ आई. टी. ने मिलकर नीरी केएफटी तैयार की।

शोधकताओं ने कहा, इस आयुर्वेदिक फार्मूले की 20 मिलीलीटर की एक डोज रोजाना सुबह और शाम

एक महीने तक दी जाती थी। हर्बल दवा ने न केवल मरीजों की किडनी को और अधिक नुकसान से बचाया, बल्कि पेट में जमा हुए तरल पदार्थ को बाहर निकालने में भी मदद की। शोधकर्ताओं ने कहा कि हर्बल फॉर्मूले के सेवन से पेट में जमा तरल पदार्थ पेशाब के जरिए शरीर से बाहर निकला।

नीरी केएफटी पौधों से निकाली गई एक हर्बल दवा है, जो पुनर्नवा, वरुण, सिगरू, सरिवा, मकोई और सिरीश जैसी जड़ी-बूटियों से बनी है। एआईएमआईएल फार्मास्युटिकल्स के संचित शर्मा ने आईएएनएस को बताया कि पिछले कुछ वर्षों में नीरी केएफटी किडनी को मजबूत करने के साथ-साथ शरीर से जहरीले तरल पदार्थों को साफ करने में कारगर साबित हुई है। जलोदर से पीड़ित मरीजों में पेट में दर्द व सूजन जैसे लक्षण हो सकते हैं, जो दूर होने के बजाय और बिगड़ जाते हैं। पेट की परेशानी बढ़ जाती है। थोड़ा खाने के बाद भी पेट भरा हुआ महसूस होता है। पेट में दबाव बढ़ने पर सांस लेने में तकलीफ होती है। इस तरह के संकेतों को लेकर सभी लोगों को सावधानी बरतते रहने की आवश्यकता है।

# पंजाब के स्वास्थ्य मंत्री ने सही नहीं किया

- डॉ अरुण मित्रा

**यह** समय चिकित्सा पेशेवरों के लिए भी है कि वे स्वास्थ्य के मुद्दों पर सार्वजनिक चिंता के मुद्दों से जुड़े रहें। इससे वे समाज से जुड़ेंगे। कुछ साल पहले मुजफ्फ रपुर और गोरखपुर में बच्चों की मौत पर कई चिकित्सा निकायों ने प्रतिक्रिया नहीं दी। चिकित्सा निकाय डॉ कफील का समर्थन करने में विफ ल रहे, जिन्हें गोरखपुर में स्वास्थ्य सेवा के बुनियादी ढांचे में दोषों को उठाने के कारण लॉक अप में रहना पड़ा। पंजाब की घटनाएं सीखने का अनुभव हो सकती हैं।

जिस घटना में पंजाब के स्वास्थ्य मंत्री ने बाबा फरीद यूनिवर्सिटी ऑफ हेल्थ साइंसेज के कुलपति को फटकार लगाई और फटे गद्दे के साथ बिस्तर पर लेटने के लिए कहा, उसने देश को शर्मसार कर दिया है। डॉ. राज बहादुर गौर, कुलपति एक ईमानदार व्यक्ति हैं जिनके खिलाफ किसी भी कुकृत्य के लिए एक भी उंगली नहीं उठाई गई है। उन्होंने हमेशा छात्रों के हित में काम किया है और परीक्षा प्रणाली को सुव्यवस्थित करने की पूरी कोशिश की है। एक उत्कृष्ट सर्जन जो प्रशासक के रूप में व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद रोगियों की देखभाल करता है और रीढ़ की सर्जरी करता रहा है, जो उसकी विशेषज्ञता है।

उन्होंने मंत्री के अनियंत्रित व्यवहार पर प्रतिक्रिया नहीं दी, यह इस बात का प्रतिबिंब है कि डॉक्टरों को मरीजों के प्रति नरम होने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है और यह उनमें से अधिकांश का सामान्य व्यवहार बन जाता है। डॉ राज बहादुर को अपमानित महसूस नहीं करना चाहिए, बल्कि उन्होंने दिखाया है कि वह उन लोगों में से एक हैं जिनकी प्रतिष्ठित संस्थान, पीजीआई चंडीगढ़ में चिकित्सा क्षेत्र में प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा दयालु होने की पहचान है। मंत्री का कृत्य न केवल निंदनीय है बल्कि उनसे न केवल डॉ. गौर से बल्कि सामान्य रूप से समाज से खुली माफी की मांग की जानी चाहिए। बुनियादी ढांचे में सुधार सीधे मंत्री की जिम्मेदारी है। कुलपति एक प्रशासक है। वह प्रदान की गई धनराशि से दी गई परिस्थितियों में काम करेगा। राज्य में सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा में सुधार के लिए कुल बजट में से 11 प्रतिशत की आवश्यकता के मुकाबले स्वास्थ्य के लिए आबंटित 3.03 प्रतिशत के अल्प बजट के साथ, केवल फटे गद्दे और चादर की उम्मीद की जा सकती है। पंजाब के लोगों द्वारा स्वास्थ्य पर किया जाने वाला खर्च देश में सबसे अधिक है।

**जब राजनीतिक व्यक्ति अपनी सनक को थोपते हैं तो इससे लोकतांत्रिक मूल्यों का क्षरण होता है जिसके लिए भारत ने हमेशा खुद को उच्च सम्मान में रखा है। हाल के वर्षों में इसमें वृद्धि हुई है।**

मंत्री को कुलपति के बजाय वित्त मंत्री या मुख्यमंत्री को निशाना बनाना चाहिए था।

इसने दिखाया है कि हमारी राजनीति का एक वर्ग चिकित्सा कर्मियों के बारे में कैसे सोचता है, चाहे वे कितने भी ईमानदार हों। इस तरह की घटनाएं पहले भी होती रही हैं। मंत्रियों की फटकार, यहां तक कि शिक्षकों को थप्पड़ मारना भी अतीत में देखा गया है। वे अपने निजी कर्मचारियों को भी असंवैधानिक शक्तियों का उपयोग करने से नहीं रोकते हैं। जब राज्य तंत्र में उच्च स्तर के लोग इस तरह के कृत्यों का सहारा लेते हैं, तो हम बेईमान तत्वों द्वारा डॉक्टरों के खिलाफ कई बार राजनीतिक आकाओं के इशारे पर हिंसा को रोकने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं!

ऐसी घटनाओं के खिलाफ चिकित्सा कर्मियों और समाज के अन्य समझदार वर्गों द्वारा एकजुट प्रयास की आवश्यकता है। स्वास्थ्य मंत्री के कृत्य की निंदा करने में डॉक्टरों के बीच सभी वर्गों द्वारा दिखाई गई एकता भविष्य में भी जारी रहनी चाहिए। भारत के मुख्य न्यायाधीश ने हाल ही में डॉक्टरों की भूमिका की सराहना की थी और कहा था कि उन्हें (डॉक्टरों को) एक बेहतर और अधिक सुरक्षित कार्य वातावरण की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि यह वह जगह है जहां पेशेवर चिकित्सा संघ बहुत महत्व रखते हैं और उन्हें मांगों को उजागर करने में सक्रिय रहने की सलाह दी। उन्होंने आगे कहा कि डॉक्टरों का पेशा शायद एकमात्र ऐसा पेशा है जो गांधीजी के सिद्धांत का पालन करता है - मनुष्य की सेवा भगवान की सेवा है।

डॉक्टरों के खिलाफ हिंसा के लिए कानून के अलावा मंत्रियों के लिए भी कुछ आचार संहिता बनाई जानी चाहिए। पुलिस को कानून का पालन करने और पेशेवर व्यवहार करने के लिए संवेदनशील बनाना भी उतना ही महत्वपूर्ण है, न कि राजनीतिक आकाओं के निर्देशों पर कार्य करना। राजस्थान के दौसा की वरिष्ठ स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉक्टर अर्चना शर्मा की आत्महत्या की घटना ने चिकित्सा जगत को झकझोर कर रख दिया है. एक मरीज की सर्जरी के दौरान मौत होने की खबर है जिसके बाद कथित तौर पर एक भाजपा नेता के संरक्षण में परिचारकों ने हंगामा किया। पुलिस ने भीड़ को नियंत्रित करने के बजाय डॉक्टर के खिलाफ आईपीसी की धारा 302 के तहत हत्या का मामला दर्ज किया। इससे परेशान होकर डॉक्टर ने आत्महत्या कर ली।

जब राजनीतिक व्यक्ति अपनी सनक को थोपते हैं तो इससे लोकतांत्रिक मूल्यों का क्षरण होता है जिसके लिए भारत ने हमेशा खुद को उच्च सम्मान में रखा है। हाल के वर्षों में इसमें वृद्धि हुई है। लोकतांत्रिक संस्थाएं सरकार में उच्च पदों से अत्यधिक दबाव में हैं जो उनकी व्यावसायिकता को प्रभावित करती हैं। ऐसी स्थितियों का बाद के वर्षों में विरोध हो सकता है। इसलिए यह समय व्यावसायिकता और संवैधानिक निकायों को लगातार मजबूत करने का है।

हालांकि यह समय चिकित्सा पेशेवरों के लिए भी है कि वे स्वास्थ्य के मुद्दों पर सार्वजनिक चिंता के मुद्दों से जुड़े रहें। इससे वे समाज से जुड़ेंगे। कुछ साल पहले मुजफ्फ रपुर और गोरखपुर में बच्चों की मौत पर कई चिकित्सा निकायों ने प्रतिक्रिया नहीं दी। चिकित्सा निकाय डॉ कफील का समर्थन करने में विफ ल रहे, जिन्हें गोरखपुर में स्वास्थ्य सेवा के बुनियादी ढांचे में दोषों को उठाने के कारण लॉक अप में रहना पड़ा। पंजाब की घटनाएं सीखने का अनुभव हो सकती हैं।

# अक्षय की रक्षा बंधन में दहेज प्रताड़ना की कहानी

रक्षा बंधन और 15 अगस्त के मौके पर दो बढ़ी फिल्में- 'रक्षा बंधन' और 'लाल सिंह चड्ढा' रिलीज हो रही हैं। यहां 'रक्षा बंधन' फिल्म के रिव्यू पर बात करने से पहले बता दें कि सालों बाद किसी फिल्म का भव्य प्रीमियर रखा गया। थिएटर को फूलों से सजाने के साथ चाट, कुल्फी, गोलगप्पा, चाय-पान आदि का स्टॉल लगाकर शादी-विवाह और मार्केट का माहौल बनाने की सफल कोशिश की गई।

## क्या है फिल्म की कहानी?

फिल्म की कहानी के बारे में बात करें, तब लाला केदारनाथ (अक्षय कुमार) दिल्ली स्थित चांदनी चौक में गोलगप्पे की पुश्तैनी दुकान चलाता है। मान्यता है कि गर्भवती महिलाएं उसकी दुकान पर गोलगप्पे खाती हैं, तब लड़का पैदा होता है। इसके चलते गोलगप्पे खाने के लिए महिलाओं की लाइन लगती है। लाला केदारनाथ की चार बहने हैं, जो शादी योग्य हो चली हैं। जीवन के अंतिम समय में मां केदारनाथ से वचन लेती है कि वह बहनों के हाथ पीले करने के बाद ही घोड़ी चढ़ेगा। केदारनाथ मां को दिए वचन पूरा करने में लगा होता है, लेकिन मुश्किलें तब खड़ी हो जाती हैं, जब चार बहनों की शादी में लाखों की दहेज देने की समस्या सामने आती है। दूसरी तरफ सपना (भूमि पेडनेकर) बचपन से केदारनाथ को प्यार करती है। सपना के पिता (नीरज सूद) को बेटी की बढ़ती उम्र के साथ उसकी शादी चिंता सताती है। वह बार-बार पहले बेटी की शादी के लिए केदारनाथ पर दबाव डालता है, पर केदारनाथ मां को दिए वचन के मुताबिक सपना और उसके पिता से मोहलत मांगता रहता है। खैर, केदारनाथ जैसे-तैसे दहेज के लिए दुकान गिरवी रखकर बहन गायत्री (सादिया खतीब) की शादी करवाता है। बाकी बहनों की शादी में दहेज देने के लिए अपनी एक किडनी बेचकर रक्षाबंधन के दिन हॉस्पिटल से घर लौटता है, तब उसे खबर मिलती है कि दहेज से प्रताड़ित होकर गायत्री ने खुदकुशी कर ली। अब आगे बहनों की शादी का क्या होगा? लाला केदारनाथ घोड़ी चढ़ पाएगा या नहीं, रक्षाबंधन और दहेज कुप्रथा पर क्या होगा? यह सब जानने के लिए थिएटर जाना होगा।

## दमदार एक्टिंग

फिल्म की कहानी की शुरुआत में हाजिर जवाबी के साथ चुटीले संवाद गुदगुदाते-हंसाते और इमोशनल करते हैं। मंझे कलाकार अक्षय कुमार और भूमि पेडनेकर की अदाकारी हो या संवाद अदायगी मनोरंजक लगती है। सपना के पिता के रोल में नीरज सूद भी खूब जंचते हैं। मैच मेकर के रोल में सीमा पाहवा का स्क्रीन प्रेजेंस अच्छा है। वहीं बहनों के रोल में न्यू कमर्स शाहजमीन कौर, दीपिका खन्ना, स्मृति श्रीकांत, सादिया खतीब आदि का अभिनय ठीक-ठाक रहा।

फिल्म के मजबूत पहलू की बात करें, तो भाई-बहन के प्यार और दहेज कुप्रथा का अच्छा मुद्दा उठाया गया है। ओवरऑल यह फिल्म हंसाती- गुदगुदाती और रुलाती भी है। वहीं कमजोर पहलू की बात करें, तो कहानी कुछ मोड़ पर निराश भी करती है।

सबसे ज्यादा डिसअपॉइंटमेंट वहां होता है, जब केदारनाथ की सबसे प्यारी-दुलारी, समझदार बहन गायत्री दहेज से प्रताड़ित होकर खुदकुशी कर लेती है और उसकी पड़ोसन चीख-चीखकर भाई और पुलिसवालों के सामने बताती भी है कि गायत्री को दहेज के लिए प्रताड़ित किया जाता था, लेकिन इसके बावजूद ससुराल पर न तो पुलिस कोई एक्शन लेती है और न ही भाई कोई सबक सिखाता है।

गले से बात यह भी नहीं उतरती कि किडनी निकाल कर लौटा केदारनाथ दर्द के मारे रिक्शेवाले से ठीक चलाने के लिए कहता है और दोस्त का सहारा लेकर घर पहुंचता है, पर बहन की बुरी खबर पाकर उसका दर्द छू-मंतर हो जाता है और वह दबढ़ते हुए बहन के घर पहुंचता है।

दहेज के लिए किडनी बेचने की बात कम ही रिलेट कर पाती है। वहीं सादिया का कम स्क्रीन स्पेस भी खलता है। समझ से परे यह भी रहा कि फिल्म का टाइटल 'रक्षा बंधन' है, लेकिन पूरी फिल्म दहेज कुप्रथा पर बात करती है।

## 12 अगस्त 2022 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी कार्तिकेय 2

फिल्म कार्तिकेय 2 कहानी शानदार विजुअल्स के साथ ही गहरे इमेशंस को भी दर्शाएगी। मेकर्स के द्वारा सोशल मीडिया के जरिए फिल्म रिलीज डेट भी जारी की जा चुकी है, जिसके मुताबिक यह फिल्म 12 अगस्त 2022 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

# रक्षाबंधन मुहूर्त

**पं. रामस्वरूप समाधिया**
ज्योतिषाचार्य

अगस्त 11, 2022 को श्रवण की राखी प्रातः 06:52 से प्रारंभ होगी। भद्रा प्रातः 10:33 से प्रारंभ होकर रात्रि 08:47 तक रहेगी । अतः श्रावणी रखी प्रातः 6:52 से प्रातः 10:33 के बीच बांध लें । यह श्रेष्ठ मुहूर्त है । दिन में 01:03 से शाम 05:25 तक शुभ लग्न है ।

प्रायः भद्रा विभिन्न राशियों में होकर कभी मनुष्य लोक, कभी स्वर्ग लोक अथवा कभी पाताल लोक में होती है । ऐसा शास्त्रों में लिखा है । चूंकि इस बार भद्रा मकर राशि मे होकर पाताल लोक में है, अतः मनुष्य लोक में इसका दोष नही रहेगा । 'शीघ्र-बोध' अनुसार भद्रा जिस लोक में होती है, वहां दोष होता है, और अन्य लोकों में वह लाभकारी होकर धनसंपदा दायक होती है ।

***सर्वे दोषः विनश्यन्ति***
***लग्न शुद्धिर यदा भवेत***

*यदि लग्न शुद्ध है, तो सारे दोषों का विनाश हो जाता है ।*
*सभी लोग दिन में कभी भी रक्षासूत्र बंधवा सकते हैं ।*

परन्तु सुबह 6:52 से 10:33 के बीच श्रावणी राखी के तहत इस काल मे भगवान को राखी बांध लें तो श्रेष्ठ रहेगा। फिर दिन में सुविधानुसार, परिवार के साथ कभी भी राखी बांध लें।

परन्तु आपके जो भी इष्ट हैं, उन्हें रक्षासूत्र अवश्य बांधें।

परमपिता परमेश्वर सबका कल्याण करें।

**समाधिया ज्योतिष केन्द्र,**
**समाधिया मंदिर, गंज,**
**सीहोर (म.प्र.)**

# जन्माष्टमी कब मनायें?

यदि आप भारतीय ज्योतिष शास्त्र को मानते हैं, तो आपकी जानकारी के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण तथ्य प्रस्तुत है । क्या आपको पता है कि भारत सरकार का एक राष्ट्रीय पंचांग निकलता है ? जिस के आंकड़े भारतवर्ष में प्रकाशित होने वाले सभी पंचांगों का मूल स्त्रोत है। इस पंचांग की स्थापना आजादी के कुछ वर्ष बाद ही, प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के प्रयास से , भारत के प्रख्यात ज्योतिषियों, चारों शंकराचार्य और तमाम विद्जनो की संयुक्त बैठको में निर्णय लेकर किया गया था । इस पंचांग में जो आंकड़े सम्मिलित किए जाते हैं, वे प्राचीन वेधशालाओं के आंकड़ों से सजीव एकत्र किए जाते हैं । और उस आधार पर पंचांग की गणना की जाती है ।

लेकिन आज भी कई कैलेंडर ज्ञान के अभाव में गलत जानकारियां लोगों तक पहुंचाते हैं । एवं मूल आंकड़ों को स्त्रोत के रूप में नहीं लेते । इस कारण जनमानस को त्योहारों पर तिथि की गणना में दिक्कत होती है ।

जैसे इस वर्ष जन्माष्टमी पर कुछ कैलेंडर में जन्मोत्सव की तिथि एवं समय 19 अगस्त दी है । जबकि देश के तमाम प्राचीन पंचांग और भारत सरकार के राष्ट्रीय पंचांग में जन्मोत्सव 18 अगस्त को मनाया जाना दिया गया है ।

क्योंकि अष्टमी तिथि 18 अगस्त की रात्रि 8:42 से 19 अगस्त की रात्रि मात्र 8:59 तक ही रहेगी। जबकि, जन्मोत्सव रात्रि 12:00 बजे मनाया जाता है । जो कि 18 तारीख की रात्रि को ही अष्टमी तिथि के साथ मनाया जा सकता है । अतः 18 अगस्त को ही जन्माष्टमी या श्री कृष्ण जन्मोत्सव मनाया जाना चाहिए । इसके बाद 19 तारीख को भी दिन में या किसी भी समय भजन कीर्तन शोभायात्रा इत्यादि किए जा सकते हैं । मथुरा में भी 18 अगस्त को मध्य रात्रि 12:00 बजे जन्मोत्सव मनाया जाएगा । एवं यशोदा मैया के घर यानी वृंदावन में दूसरे दिन 19 अगस्त को जन्मोत्सव मनाया जाएगा । आपकी सुविधा के लिए राष्ट्रीय पंचांग पर आधारित राष्ट्रीय कैलेंडर का स्क्रीनशॉट प्रस्तुत है जिसमें 18 अगस्त को जन्माष्टमी (स्मार्त ) के लिए दी गई है एवं (वैष्णवों ) के लिए 19 अगस्त दी गई है । 'स्मार्त' यानी 'ग्रहस्थ' एवं 'वैष्णव' यानी 'दीक्षा प्राप्त', साधु - संत - सन्यासी, इत्यादि । यदि आप मुहूर्त के अनुसार श्री कृष्ण जन्मोत्सव मनाना चाहते हैं, तो 18 अगस्त को रात्रि 12 बजे मनाएं । अन्यथा वैसे तो हर दिन, हर पल प्रभु का ही है ।

**राधे-राधे, जय श्री कृष्ण ।**

# बिना चुनाव जीते कांग्रेस का कुछ नहीं होगा

**- शकील अख्तर**

**सड़क** पर राहुल और प्रियंका ने जितने संघर्ष किए हैं उतने बहुत कम नेताओं ने किए हैं। और जब पहले विपक्ष के नेता सड़क पर आते थे तो मीडिया का उन्हें पूरा समर्थन मिलता था। आज होस्टाइल (विरोधी) मीडिया के सामने संघर्ष करना बढ़ी बात है। मगर हो गए। बहुत हो गए। और होते भी रहेंगे। मगर अब राहुल को एक तो अपनी नजदीकी टीम का सख्ती से रिव्यू करना चाहिए। सड़क के धरना प्रदर्शन तब असर डालते हैं जब वे जनता तक सही परिप्रेक्ष्य में पहुंचते हैं। लेकिन जैसा अभी दो दिन पहले राहुल गांधी ने महंगाई पर प्रदर्शन से पहले कहा कि इस मीडिया में हिम्मत नहीं है। सही बात है। मीडिया महंगाई, उससे पीड़ित लोग और उनके समर्थन में उठाई आवाज को दिखाने के बदले यह बता रहा था कि राहुल ने अपनी प्रेस कान्फ्रेंस में किस अक्षर से शुरू होने वाले शब्द को सबसे ज्यादा बोला और किस को कम। मगर यह नहीं बता रहा कि राहुल कितनी बार मीडिया के सामने आए। खासतौर से इन दो-ढाई साल के सबसे संकट भरे कोरोना काल में। और इसका तो जिक्र भी नहीं कर सकता है कि किसने आठ साल में एक बार भी मीडिया का सामना नहीं किया। मीडिया अपने पतन के निम्नतम स्तर पर है। कांग्रेस चाहे कितना ही बढ़ा प्रदर्शन कर ले। उसकी नेता, महिला नेता प्रियंका गांधी को सड़क पर घसीटा जाए, सांसद दीपेन्द्र हुड्डा के कपड़े फाड़े जाएं। राहुल को उन्हें बचाने के लिए जाना पड़े। यूथ कांग्रेस के अध्यक्ष बीवी श्रीनिवास के बाल खीचें जाएं, लात मारी जाए। कुछ हो जाए! मीडिया यही पूछता रहेगा कि विपक्ष कहां है? सड़क पर क्यों नहीं आता?

जनता में यही नजरिया जाता है। पत्रकार तक जो दिन भर कांग्रेस के प्रदर्शन को कवर करते रहे शाम को घर जाते हुए जब कुछ खरीदते हैं और महंगा लगता है तो कहते हैं कि ये कांग्रेस कुछ करती क्यों नहीं?

राहुल ने यही कहा। पहले भी कहते रहे हैं।यह मीडिया कायर है। अभी इसी अखबार ने लिखा और सही लिखा दलाल है। वह नहीं दिखाएगी। तो ऐसे में क्या हो? इन परिस्थितियों में खुद को चर्चा में लाने का एक ही तरीका है चुनाव जीतना। अभी स्थानीय निकायों के थे। मध्य प्रदेश में। कांग्रेस ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। महापौरों के डायरेक्ट हुए चुनाव में अगर ओवैसी और बीएसपी कांग्रेस के वोट काटकर भाजपा की मदद नहीं करते भाजपा और कांग्रेस दोनों की बराबर सीटें रहतीं। वहां 16 शहरों में महापौर है। पिछले चुनाव में सभी जगह भाजपा जीती थी। इस बार एक सीट पर बीएसपी और एक पर भाजपा के नए साथी ओवैसी ने कांग्रेस के इतने वोट काटे कि उसी की वजह से भाजपा वह दो सीट भी जीत गई। अगर वह दो भाजपा हारती तो फिर कांग्रेस और भाजपा के बराबर रहते। सात-सात। अभी 9 भाजपा 5 कांग्रेस एक आप और एक निर्दलीय को मिली।

तो इस जीत से मध्य प्रदेश में खलबली मच गई। मीडिया इन खबरों को रोक नहीं पाई। उसे अपना अस्तित्व बचाने के लिए इन खबरों को दिखाना और छापना पड़ा। और नतीजा जनता में खूब चर्चा शुरू हो गई। मीडिया चाहे जितना स्वामी भक्त हो जाए। मगर अभी देश में वह स्थिति नहीं आई है कि वह चुनाव के नतीजों के उलट नतीजे बताने लगे। वह रात के दिन, महंगाई को सस्ताई और चीन की घुसपैठ को कहां घुसा, कौन घुसा तो कहने लगा। मगर अभी जीते को हारा और

हारे को जीता कहने की हिम्मत उसमें नहीं आई है। कभी आ भी सकती है। सरकार कहे हम पचास सीटें जीते, चुनाव आयोग कहे नहीं नहीं सर साठ और मीडिया कहे कि सत्तर से कम हैं ही नहीं। बचीं दस, उनका भी पता नहीं कि कौन जीता है। कहीं भाजपा ही जीती हो! मगर विपक्ष लोकतंत्र में होना चाहिए इसलिए उसने खुद ही दे दी हों। कुछ एंकर दान, दया शब्द का प्रयोग भी कर सकते हैं। लेकिन वह स्थिति आए इससे पहले कांग्रेस को कुछ चुनाव जीतना पड़ेंगे। कांग्रेस को इसलिए कि जीतने को तो ममता बनर्जी बंगाल, आम आदमी पार्टी पंजाब जीत गए मगर यह भाजपा की हार नहीं थी। भाजपा इन प्रदेशों में कभी रही ही नहीं। ऐसे ही तमिलनाडु, केरल, तेलंगाना अन्य प्रदेशों में जहां बीजेपी का कभी कोई अस्तित्व ही नहीं रहा वहां उसकी हार उसके केन्द्र के चुनाव पर की विपरीत असर नहीं डालती है। उसे असर पड़ता है वहां जहां कांग्रेस से उसकी डायरेक्ट फाइट होती है। मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, कर्नाटक और अभी इस साल जहां चुनाव होना हैं हिमाचल और गुजरात। राजनीतिक माहौल यहां से बनता है। कांग्रेस और खासतौर से राहुल पता नहीं क्यों चुनावों के महत्व को ठीक से नहीं समझ रहे। लोकतंत्र में इसके अलावा और क्या चीज है जो आपको जनता में स्वीकृति दिलाती है? मगर राहुल का रवैया चुनावों और उसके नतीजों को लेकर बहुत कैजुअल है। उत्तराखंड और पंजाब इसी चलताऊ रवैये की वजह से हारे।

इस साल हिमाचल और गुजरात के बाद अगले साल 9 राज्यों में चुनाव होना हैं। इन राज्य में भी चार राज्य बढ़े राज्य वह हैं जहां कांग्रेस का भाजपा के साथ सीधा मुकाबला है। इस साल दो राज्यों के चुनाव के बाद फिर उन चार राज्यों मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ और कर्नाटक के चुनाव ही 2024 लोकसभा से पहले का माहौल बनाएंगे। दो इस साल के और चार अगले साल के राज्यों में राहुल किन नेताओं के जरिए चुनाव लड़ेंगे यह महत्वपूर्ण है। गुटबाजी पर अभी से सख्ती लगाना होगी। और ऐसे किसी नेता को चुनावी राज्य में नहीं रहने देना होगा जो अपने राज्य में गुटबाज नेता के तौर पर जाना जाता हो। अपने राज्य का चुनाव हरवाने में जिसकी बढ़ी भूमिका हो वह दूसरे राज्य में क्या एकता करवा पाएगा और चुनाव जितवाएगा?

# तीन कविताएं

अंकुर सिंह

## राखी भेजवा देना

बहन, राखी भेजवा देना,
अबकी मैं ना आ पाऊंगा।
काम बहुत हैं ऑफिस में,
मैं छुट्टी ना ले पाऊंगा।।

कलाई सुनी ना रहें मेरी,
तुम याद ये रख लेना।
अपने भाई के पते पर,
राखी तुम भेजवा देना।।

ये महंगाई है सबपे भारी,
फिर भी राखी भेजवाना।
गर पूछे भांजी भांजा तो,
उन्हें मामा का प्यार कहना।।

राखी पर ना मेरे आने से,
तुम मुझसे ना रूठ जाना।
हाथ जोड़ कर रहा निवेदन,
राखी जरूर भेजवा देना।

भेज रहा राखी उपहार संग,
चिट्ठी में प्यार के दो बोल।
माफ करना अपने भाई को,
मना न सका पर्व अनमोल।।

राह देख अबकी तुम मेरी,
राखी थाली सजा ना लेना।
मेरे छुट्टी का है बड़ा झंझट,
भेज राखी तुम फर्ज निभाना।

## पंद्रह अगस्त

पंद्रह अगस्त सैंतालीस को,
दिवस कैलेंडर था शुक्रवार।
मिली हमें आजादी इस दिन,
खुला अपने सपनों का द्वार।।

आजादी के साथ देश ने,
बंटवारे का दर्द भी झेला।
आजादी खातिर गोरों ने,
खून की होली हमसे खेला।

आजादी की चाहत दिल में,
सत्तावन में दहक उठी थी।
कोलकत्ता के बैरकपुर में,
मंगल की गोली बोली थी।।

उन्नीस सौ सैंतालीस के पहले,
अपनी भी बड़ी लाचारी थी।
ब्रिटिश सरकार जुल्म ढहाती,
फिरंगी सरकार दुष्टाचारी थी।।

सत्ताइस फरवरी इकतीस को,
आजाद ने खुदपर पिस्टल ताना।
पच्चीस साल का नव-युवक,
आजादी का था दीवाना ।।

उन्नीस सौ उन्तीस में
पूर्ण स्वराज्य की मांग किया।
अगस्त बयालीस में गांधी ने,
भारत-छोड़ो का एलान किया।

कई शहादत के बाद हमने,
आज तिरंगा लहराया।
नमन वीरों के कुर्बानी पर,
जिससे देश आजादी पाया।
जय हिन्द !

## जन्माष्टमी

भादो मास के अष्टमी,
कृष्ण लिए अवतार।
पुत्र मैया देवकी का,
बना सबका तारणहार।।

मथुरा के कारागार में जन्मे,
बाल-लीला किए गोकुल में।।
यमुना किनारे खेले-खाले
शिक्षा लिए गुरुकुल में।।

गोकुल में चोरी - चोरी,
माखन चुरा खूब खाते थे।
मित्र-मंडली और यारो संग,
कृष्ण गईया चराने जाते थे।।

हाथो में होती इनके मुरली,
मुकुट की शोभा बढ़ाता मोर।
यशोदा मैया का ये लाडला,
कहलाता आज भी माखन चोर।।

हे केशव, हे माधव, सुनो हे गोपाल,
इस जीवन में पीड़ा मुझे है अपरम्पार ।
मुरली वाले प्रभु, मुरली बजाकर ,
कर दो मेरी नैया को तुम पार।।

आज पर्व है प्रभु जमाष्टमी का,
कर दो मुझपर इतना उपकार।
हर पल, हर क्षण हम भक्ति करे,
और तुम करो मेरे जीवन का उद्धार।।

**हरदासीपुर, चंदवक**
**जौनपुर, उ. प्र. -222129.**
**मोबाइल - 8367782654.**

**आचार्य मीता**
एस्ट्रो, टेरो रीडर
मो. 9424577166

**मेष-** अगस्त माह की शुरुआत बेहद शुभ होगी। पहले ही सप्ताह में किसी अच्छी खबर के साथ खुशियां आपके जीवन में दस्तक देंगी। इस दौरान आपको अपनी मेहनत का पूरा फल मिलेगा। परीक्षा-प्रतियोगिता की तैयारी में जुटे लोगों को मनचाही सफलता मिलेगी। करिअर और कारोबार की दृष्टि से भी यह समय आपके लिए बेहद शुभ रहेगा। कार्यक्षेत्र में आपके काम को सीनियर सराहेंगे और जूनियर का पूरा सहयोग मिलेगा। आपकी आय के नए स्रोत बनेंगे और संचित धन में बढ़ोत्तरी होगी।

**वृष-** शुरुआत बेहद शुभ साबित होगी। इस दौरान आपके सोचे हुए कार्य समय पर पूरे होने के कारण आपके भीतर गजब का उत्साह देखने को मिलेगा। इस दौरान आप जिस काम को हाथ लगाएंगे उसमें आपको लोगों का सहयोग और सफलता मिलती दिखाई पड़ेगी। यदि आप लंबे समय से अपने कारोबार में विस्तार करने की सोच रहे थे तो यह समय आपके लिए बेहद ही शुभ रहने वाला है।

**मिथुन-** माह की शुरुआत में ही लंबे समय से अटके किसी काम के पूरे होने पर आप हर्ष का अनुभव करेंगे। इस दौरान आपको सौभाग्य का पूरा साथ मिलेगा। कार्यक्षेत्र में कोई बड़ी जिम्मेदारी मिल सकती है। असम्भव सा लगने वाला कार्य भी आप अपने सीनियर और जूनियर की मदद से करने में कामयाब हो जाएंगे।

**कर्क-** करिअर और कारोबार से जुड़े अहम फैसले ले सकते हैं, हालांकि उन्हें ऐसा करते समय खूब सोच-विचार कर लेना चाहिए, क्योंकि इसका इन फैसलों का आपके भविष्य पर खासा असर पड़ेगा। बेहतर होगा कि आप कोई भी बड़ा कदम उठाते समय किसी शुभचिंतक या फिर प्रोफेशनल की राय ले लें। व्यवसाय से जुड़े लोगों को इस दौरान मनचाहा लाभ और प्रगति देखने को मिलेगी।

**सिंह-** महीने में अपनी सेहत और संबंधों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत रहेगी। आपको इस महीने इस बात का पूरा ख्याल रखना होगा कि आपकी बात से ही बात बनेगी और आपकी बात से ही बात बिगड़ेगी। ऐसे में फिर चाहे घर हो या फिर आपका कार्यक्षेत्र लोगों के साथ अपना व्यवहार नरम रखें और अहंकार में आकर किसी का अपमान करने की भूल बिल्कुल न करें। माह की शुरुआत में कामकाज की व्यस्तता बनी रहेगी।

**कन्या-** यदि आप लंबे समय से भूमि-भवन या वाहन खरीदने की सोच रहे थे तो इस माह आपकी यह कामना पूरी हो सकती है। अगस्त महीने की शुरुआत से ही आपको धन लाभ तो खूब होगा लेकिन उसके मुकाबले खर्च की अधिकता बनी रहेगी, जिसके कारण आपका आर्थिक संतुलन थोड़ा गड़बड़ा सकता है।

**तुला-** अगस्त का महीना थोड़ा उतार-चढ़ाव लिए रहने वाला है। इस माह आपको कभी खुशी कभी गम देखने को मिल सकता है। मसलन अगस्त महीने की शुरुआत में जहां आपके लिए बेहद अनकुल साबित होने वाली है और इस दौरान आपको करिअर-कारोबार में मनचाही प्रगति और लाभ मिलेगा, वहीं माह के दूसरे सप्ताह में जीवन से जुड़ी कुछ बाधाएं आपकी चिंता का बड़ा कारण बनेगी। इस दौरान घर परिवार से जुड़े किसी व्यक्ति के साथ विवाद भी आपके मानसिक तनाव का कारण बनेगा।

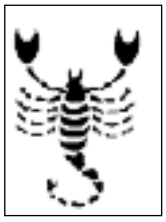

**वृश्चिक-**वृश्चिक राशि के जातकों के लिए अगस्त महीने की शुरुआत थोड़ी मुश्किलों भरी रह सकती है। इस दौरान आपको अपने काम में सफलता पाने के लिए अतिरिक्त परिश्रम और प्रयास की आवश्यकता बनी रहेगी। माह की शुरुआत में कार्यक्षेत्र में कामकाज का अतिरिक्त बोझ आप पर आ सकता है। इस दौरान कारोबार में भी आपको अपने कंपटीटर से कड़ी चुनौती मिल सकती है लेकिन आप कड़ी मेहनत और प्रयास के जरिए इन सभी समस्याओं से पार पाने में सफल होंगे। जो लोग लंबे समय से करिअर की तलाश में इधर-उधर भटक रहे थे।

**धनु-** धनु राशि के जातकों के लिए अगस्त माह की शुरुआत शुभता और सफलता लिए है। माह के पहले सप्ताह में ही करिअर और कारोबार से जुड़ी शुभ सूचनाएं मिलेंगी। जो लोग विदेश में करिअर या कारोबार के लिए प्रयासरत हैं, उन्हें मनचाही सफलता प्राप्त होगी। आईटी सेक्टर से जुड़े लोगों के लिए यह समय काफी शुभ साबित होगा। कोर्ट-कचहरी में चल रहे मामलों में फैसला आपके पक्ष में आएगा। भूमि-भवन के क्रय-विक्रय से लाभ होगा।

**मकर-** मकर राशि के लिए अगस्त का महीना मिलाजुला साबित होने वाला है। माह के शुरुआत में करिअर और कारोबार से जुड़ी अड़चनें आपकी परेशानी का बड़ा सबब बन सकती हैं। आर्थिक दृष्टि से भी यह समय थोड़ा चुनौती भरा रह सकता है। इस दौरान आपके सामने कुछ बड़े खर्च सामने आ सकते हैं, हालांकि धन से जुड़ा संकट माह के दूसरे सप्ताह उत्तरार्ध तक दूर हो जाएगा। इस दौरान आपको किसी योजना या कारोबार में धन निवेश करते समय अपने शुभचिंतकों की सलाह लेना न भूलें।

**कुंभ -** कुंभ राशि से जुड़े लोगों को अगस्त के महीने में किस्मत से ज्यादा अपने कर्म पर विश्वास करना होगा। इस माह आप अपने काम दूसरों के भरोसे छोड़ने की बजाय स्वयं करने का प्रयास करें अन्यथा आपको तमाम तरह की परेशानियां झेलनी पड़ सकती है। नौकरीपेशा लोगों को आज का काम कल पर छोड़ने और व्यवसाय से जुड़े लोगों को बगैर सोचे-समझे किसी योजना में धन लगाने से बचना होगा।

**मीन-** मीन राशि के जातकों के लिए अगस्त का महीना जीवन में आगे बढ़ने और तरक्की करने के नए अवसर लेकर आ रहा है, जिसे पाने के लिए आपको अपने समय और उर्जा का प्रबंधन करने की जरूरत रहेगी। माह की शुरुआत में कार्यक्षेत्र में विरोधियों और व्यवसाय में कंपटीटर से मिलने वाली चुनौतियों से परेशान होने की बजाय आप अपने विवेक और साहस से उनसे पार पाने का प्रयास करें। ऐसा करने पर आपको अपने शुभचिंतकों का भरपूर साथ मिलेगा और आप पाएंगे कि कठिन परिस्थितियां ज्यादा दिन नहीं रहेंगी क्योंकि अगस्त माह के दूसरे सप्ताह से आपको सौभाग्य का साथ मिलने लगेगा।

आर्गेनिक प्रोडक्ट :-

गेहुँ आटा, मल्टीग्रेन आटा, बाफला/बाटी आटा, बाजरा आटा ज्वार आटा, गेहुँ दलिया, तुअर दाल, मूंग दाल, बेसन, मक्का आटा आदि.....

## Be Attention

* Ancestral taste
  पुराना स्वाद
  (दादा दादी के जमाने का )
  जब शुध्द खाया नही तो शुध्द जानोगे कैसे?
* Smart Women
* Smart Generation
* Buy Smart

## Pride of Sehore (m.p.)

अपने शहर के Best Quality Product सम्पूर्ण भारत में Amazon.in के द्वारा घर घर पहुंचाए जा रहे है | मध्यप्रदेश के साथ खास कर महाराष्ट्र गुजरात, तमिलनाडु, तेलागना, सिक्कीम, छतीसगड, केरल, उ.प्र., दिल्ली जैसे राज्यो मे विकय किये जा रहे है.....

# "Blue Sky Home Stay"

Offers, a state of the art fully furnished 3 Bedroom apartment,

for an enjoyable and comfortable stay for the guests.

This apartment can be booked for long as well as short stays.

Do connect with us if you or your guest are planning for a stay in Bhopal.

You can book the apartment via airbnb.com or booking.com
For direct booking: Call / Whatsapp 9827318384